तेज साप्ताहिक मनोरंजन टैक्स १ रुपया

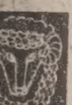
दीवाना




पंचतंत्र
मुझे बुखार है
रीछपाल इतना दिन चढ़ गया तुम बाहर नहीं आये ?
जरूर-जरूर !
मैं आज नहीं आ सकूँगा। मुझे हल्का स बुखार है। मां ने बाहर जाने से मना क दिया है। तुम मेरे दोस्तों को मेरा संदे देना, कहना मैं बीमार हूँ, बुखार है कहीं वह मेरा इन्तजार करते न रह जा पहुंचाओगी न सन्देश ?
क्या-क्या सन्देश था ? रीछपाल ने कहा था, कहना मैं बीमार हूं, बुखार है।
मैं बीमार हूं, बुखार है !
बैसाखीनन्द, मैं बीमार हूं, बुखार है।
तुम बीमार हो, बुखार है तो मैं क्या क मैं कोई डाक्टर हूं। जाओ कोई जड़ी खा लो और अपनी खोह में जाकर सो
तेन्दुलकर, मै बीमार हू, बुखार है।
तो फिर तुम बाहर छलांगे मारती क्यों घूम रही हो ? बुखार है, सर्दी लग गई तो निमोनिया भी हो सकता है, इनसेफलाइट्स भी हो सकता है। मेरा मुँह क्या देख रही हो ? बात समझ में नहीं आई।
अपने घर आओ और रजाई ओढ़क जाओ। बाहर निकलने की कोशिश न वर्ना मुझसे बुरा कोई न होगा।
हर कोई मुझे रजाई ओढ़कर सो जाने के लिए कह रहा है। जरूर कोई बात होगी। मुझे ऐसा ही करना चाहिए, कहीं कुछ हो न जाए।
मैं दोबारा रीछपाल का संदेश कहीं नहीं पहुंचाऊंगी। बड़े अजीब संदेश देता है। बीमार वह पड़ता है और लेटना मुझे पड़ा।
शिक्षा—अपनी गलतियों का दो दूसरे के सिर मढ़ने की कोशिश

साप्ताहिक भविष्य

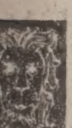
पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा


मेष : आय में वृद्धि, अफसरों से मेल-जोल, झगड़े या मुकदमे में परेशानी, यात्रा में सुख, आय यथार्थ, कामों में सफलता कुछ देर से मिलेगी, शत्रु एवं रुकावटों पर विजय, कारोबार बढ़ेगा।

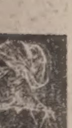

वृष : सावधानी से काम करें, राजकीय कामों में परेशानी, वातावरण अनुकूल रहेगा एवं हालात भी धीरे-धीरे सुधर जायेंगे, रुकावटें दूर होंगी, रुका पैसा मिल सकता है। जरूरी काम बनते जायेंगे।


मिथुन : हालात ठीक चल पड़ेंगे, कामों में रुचि एवं आय बढ़ेगी। लाभ के साथ-साथ खर्चा भी काफी होगा, यात्रा करनी ठीक नहीं, बड़ों की ओर से चिन्ता। परिश्रम काफी, बिगड़े काम बनेंगे।

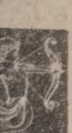

कर्क : सुस्ती का प्रभाव रहेगा, काम भी कुछ देर से बनेंगे, हालात ठीक चलेंगे परन्तु भाग्य अभी पूरा साथ न देगा। धार्मिक कामों में रुचि, कारोबार सुधरेगा, शारीरिक कष्ट, आय कम, खर्च ज्यादा बढ़ेगा।


सिंह : अच्छे-बुरे, मिले-जुले फल मिलेंगे, व्यापार से यथार्थ लाभ, सेहत को संभाले रखें पेट या सिर में तकलीफ, कारोबार पहले जैसा ही, किसी विशेष उलझन से छुटकारा, परिश्रम अधिक, सफलता देर में मिलेगी।

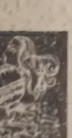

कन्या : व्यय अधिक, धन की चिन्ता बढ़ेगी, आय अधिक एवं हालात भी सुधरते महसूस होंगे। कारोबार ठीक, भाइयों से सुख व सहयोग, सम्पत्ति के कामों में सफलता, सेहत खराब तथा पारिवारिक सुख मिलेगा।

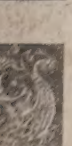

तुला : आय में वृद्धि व खर्चा यथार्थ होगा, मशीनरी से बचें, चोट या परेशानी पैदा हो सकती है। यात्रा छोड़ दें, लाभ देर से मिलेगा, व्यर्थ की चिन्ता या क्लेश रहेगा, आर्थिक स्थिति व हालात सुधरेंगे।


वृश्चिक : कारोबार में उन्नति, अधूरा काम बनेगा, वातावरण अनुकूल रहने पर भी छोटी-छोटी बातों पर परेशानी ज्यादा रहेगी। सज्जन पुरुषों का परामर्श लाभप्रद रहेगा। नया काम व यात्रा न करें।


धनु : वातावरण सुधरेगा, आय यथार्थ, व्यापारिक क्षेत्र में कुछ परेशानी फिर भी आर्थिक लाभ अच्छा होगा। विशेष काम देर से बनेंगे। यात्रा शुभ, आय में वृद्धि व झंझटों से परेशानी रहेगी।


मकर : सावधानी से रहें, व्यय बढ़ेगा, यात्रा में कष्ट, काम-काज का बोझ अधिक, लाभ बढ़ेगा परन्तु मिलेगा कुछ देर से, नातेदारों से मेल-जोल, यात्रा सफल, हालात ठीक व आय-व्यय यथार्थ होगा।


कुम्भ : कोई विशेष सूचना मिलेगी, स्त्री पक्ष से चिन्ता, व्यर्थ के झगड़े-झंझटों से परेशानी, काम भी देर से बनेंगे, आय कम व्यय अधिक, मित्रों से सहयोग, आर्थिक दशा सुधरेगी, कारोबार बढ़ेगा, भाग्य साथ देगा।


मीन : यात्रा सफल, विरोधी पक्ष से सावधान रहें, रुके काम बनेंगे, परिवार से सुख, हालात में सुधार होता महसूस होगा। रुका पैसा मिल सकता है। यात्रा की आशा है। परन्तु सावधानी से करें।

आपके पत्र

दीवाना का नया अंक मिला हमेशा की तरह यह अंक भी बड़ा रोचक लगा। मैं करीब दस साल से दीवाना का पाठक हूँ। दीवाना पढ़ने के साथ साथ इकट्ठे करने का भी बेहद शौक है सचमुच में दीवाना हास्य रस से भरपूर पत्रिका है। मुझे दीवाना में सिलबिल-पिलपिल, मोटू-पतलू, पंचतन्त्र, आपस की बातें, काका हाथरसी बेहद पसन्द हैं। परन्तु पिछले कई दिनों से मोटू-पतलू के रंगीन न होने के कारण मजा नहीं आता। कहानी अनहोनी बेहद रोचक लगी, लेखिका को मेरी तरफ से बधाई।

एम० एस० गुजराल—करनाल

दीवाना का अंक दस,
ऐसा रहा कि बस।
गाया चिल्ली का यश,
पीता रहा हास्य-रस ॥

80

सच! दीवाना के हास्य का मधुर रसपान बहुत ही गुदगुदाहपूर्ण होता है। मगर अंक-१० में सेठ घसीटाराम पालकी वाला की हालत पर बहुत तरस आया। कृपया हमारी तरफ से उन्हें सहानुभूति के दो शब्द कह दें।

सुम्मी व रवि—पटना

दीवाना का अंक १० मिला मुखपृष्ठ पर पुस्तकालय का चित्र देखकर हंसी आई। इस अंक में मोटू-पतलू, आदिम युग और अनहोनी काफी रोचक लगी। बड़ा लफड़ा व चोर-चोर पढ़ कर मजा आ गया। अगले अंक की प्रतीक्षा में।

मोहन लाल शर्मा—करनाल

दीवाना का अंक १० प्राप्त हुआ, पढ़ कर मन मयूर नाच उठा। 'सवाल यह है', दीवाना पेज २ मनोरंजक एवं रोचक लगा। इस अंक में 'काका के कारतूस' पढ़कर मजा आ गया। मोटू-पतलू, फैण्टम, आपस की बातें बेहद पसन्द आयीं। मुखपृष्ठ आकर्षक एवं रोचक था। मेरा सबसे प्यारा स्तम्भ 'दीवाना फ्रेन्डस क्लब' है। पत्रिका का मूल्य इतना कम होते हुए भी अपने पाठकों को अधिक से अधिक मनोरंजक सामग्री देने का प्रयास करती है।

कृष्णचंद्र सोनी—भिलाई

दीवाना का अंक १० प्राप्त हुआ। मुखपृष्ठ देखकर हँसते-हँसते पागल हो गया। मोटू-पतलू और सिलबिल पिलपिल भी मजेदार रहे। जगजीत सिंह राणा का कार्टून अच्छा लगा। धारावाहिक उपन्यास 'अनहोनी' भी बहुत अच्छा लगा। दीवाना ज्ञान वर्धक पत्रिका है इसमें दिनों-दिन उन्नति हो। अगले अंक का इंतजार है।

नीराज निगम—हापुड़

इन्तजार की घड़ियां समाप्त हुई और दीवाना अंक १० काफी देर से यानी १-६-८० का १५-६-८० को मिला। मुखपृष्ठ पर हास्य रस के खाने में चिल्ली को देख-देख हँसते-हँसते पेट में दर्द होने लगा। मोटू-पतलू, फैन्टम, चिलमगोजामल का ब्लड प्रेशर, शाबाश बेटे आइसक्रीम खाओ, सभी कुछ रोचक लगे। अन्तिम पष्ठ पर ऊँह पाउडर का एडवरटाइज भी अच्छा लगा। बहुत समय से परोपकारी जी से मुलाकात नहीं हुई।

सुलतान—हैदराबाद

परोपकारी जी परोपकार करने विदेश चले गये हैं। —सं०

हास्य पत्रिकाओं के सम्राट 'दीवाना' के अंक ११ को एक लम्बी प्रतीक्षा के बाद पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसमें मोटू-पतलू बेहद पसन्द आए। तीन जासूस और बोलती खोपड़ी का रहस्य का भाग-- १ बहुत ही रोमांचक रहा। अगले अंक की बेसब्री से प्रतीक्षा कर रहा हूं।

—अमृतेश सिन्हा, पटना।

मुख्य पृष्ठ पर

छाते के गुण बहुत हैं
सदा रखियो ध्यान
आया मौसम बरसात का
छोड़ छाड़ दो काम।
छोड़ छाड़ दो काम
छाते को उल्टा करलो
'शॉवर' लगाकर नीचे
नहा नहा कर जी को भरलो॥

दीवाना

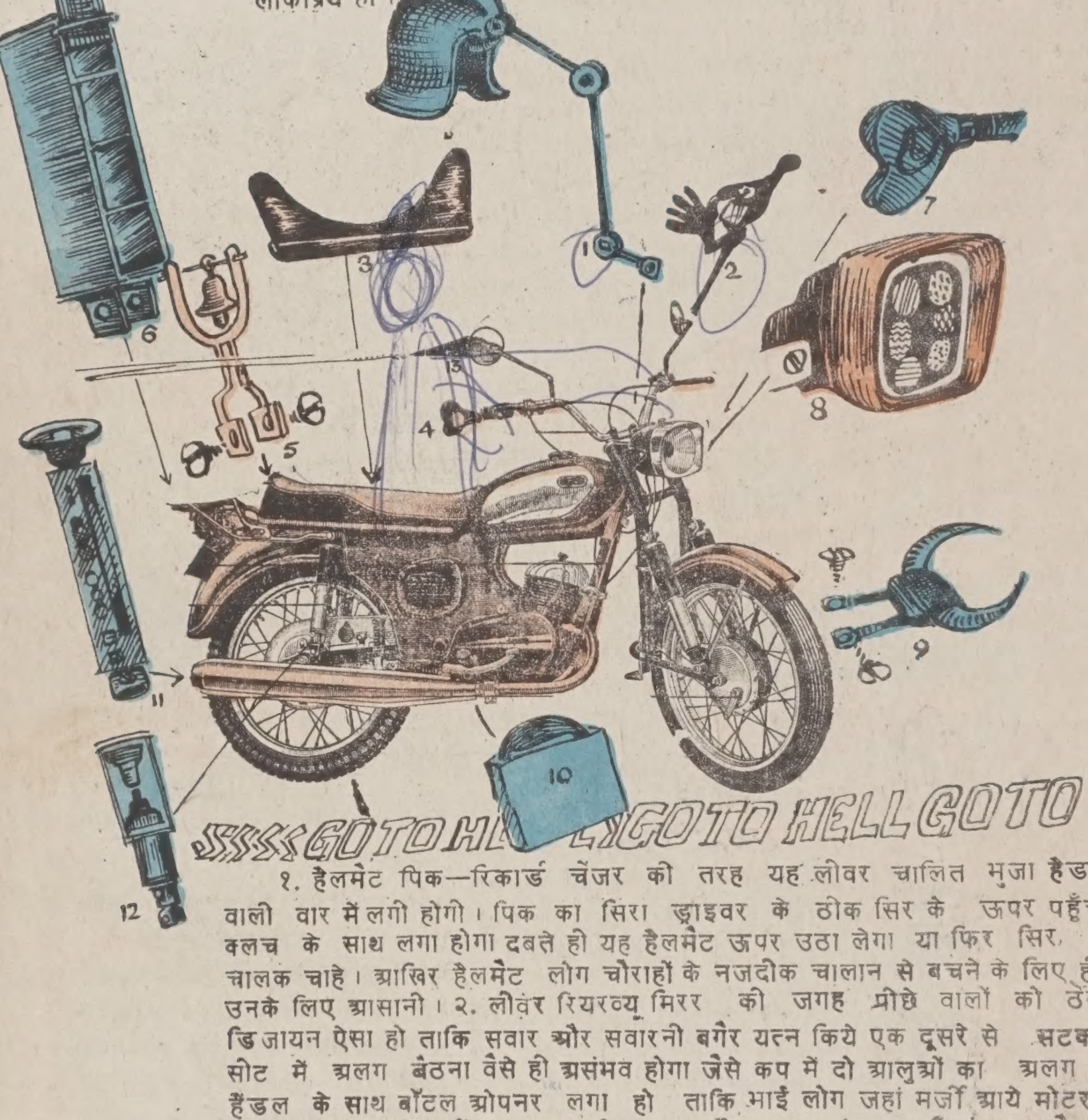
अंक : १४ वर्ष : १६
१५ सितम्बर १९८०

सम्पादक: विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका: मंजुल गुप्ता
उपसम्पादक: कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दे
छमाही: २५ वार्षिक: ४८ द्विवार्षिक: ९

ओ३म् मोटरसाइकिलाय नमः!

मोटर साइकिल युवा लोगों का चहेता वाहन है लेकिन इसमें कई कमियां हैं। बाजारों में बिकने वाले आम मोटर साइकिलों के डिजायनों में युवा वर्ग के लोगों की आदतों, रुचि-अरुचियों का कतई ध्यान नहीं रखा जाता। हम मोटर साइकिल निर्माताओं को कुछ सुझाव पेश कर रहे हैं कि मोटर साइकिलों के डिजायन में क्या-क्या परिवर्तन किये जा सकते हैं जिससे यह युवा वर्ग में और लोकप्रिय हों।



१. हैलमेट पिक—रिकार्ड चेंजर की तरह यह लीवर चालित भुजा हैड लाइट के ऊपर वाली वार में लगी होगी। पिक का सिरा ड्राइवर के ठीक सिर के ऊपर पहुँचेगा। लीवर जो क्लच के साथ लगा होगा दबते ही यह हैलमेट ऊपर उठा लेगा या फिर सिर पर रखेगा जैसा चालक चाहे। आखिर हैलमेट लोग चौराहों के नजदीक चालान से बचने के लिए ही तो लगाते हैं। उनके लिए आसानी। २. लीवर रियरव्यू मिरर की जगह पीछे वालों को ठेंगा। ३. सीट का डिजायन ऐसा हो ताकि सवार और सवारनी बगैर यत्न किये एक दूसरे से सटकर बैठ सकें। इस सीट में अलग बैठना वैसे ही असंभव होगा जैसे कप में दो आलुओं का अलग रहना। ४. दायें हैंडल के साथ बॉटल ओपनर लगा हो ताकि भाई लोग जहां मर्जी आये मोटर साइकिल रोक बीयर या कोका पी सकें। ५. प्रायः सीट पर तीन चार पांच सवारियां तक बैठ जाती हैं पीछे वाले के गिरने का खतरा रहता है। अतः सीट के छोर के साथ पीछे की ओर फ्लांट लेता हुआ चित्र पांच का उपकरण लगा हो। जब सीट फुल होगी तो इस पर दबाव पड़ेगा जिससे घंटा बजेगा। घंटे के बजने का अर्थ होगा अब और सवारियां नहीं। ६. कैरियर पर पुस्तकों के लिए ऊंचा सा रैक फिट हो। आजकल स्कूल कालिजों के कोर्सों में कितनी किताबें ढोनी पड़ती हैं। ७. स्टार्ट करने के लिए किक मारने का जो पैडल होता है उसमें नई बात हो। कुछ भी हो कि लात मारने में आनन्द आये। पैडल सिम्बल यानी प्रतीक चिन्ह वगैरह लगाया जा सके। गर्ज में ऐसी व्यवस्था हो कि उसमें किसी की फोटो या-यह है कि आदमी जिस चीज को लात मारना चाहता है उसका प्रतीक चिन्ह पैडल के साथ लगा हो। उदाहरण के लिए कोई व्यक्ति अपने शत्रु का चित्र लगा सकता है। या अधिक होमवर्क देने वाले टीचर की मूर्ति या सीधा ग्लोब जो दुनिया को लात मारना चाहता हो। ८. हैड लाइट में पांच छः रंग के घूमते फिल्टर लगे हों जिससे सफर भी डिस्को-ड्राइव बन जाये। ९. आगे सींग लगे हों इस देश में हार्न की लोग परवाह नहीं करते। १०. किट बाक्स के साथ एक और किट हो जिसमें धोती रखी हो। जब पैट्रोल के पैसे चुकाने में कपड़े उतर जायें तो चालक कम से कम उसे ही पहन कर काम चला ले। ११. साइलैंसर की जगह एम्पलीफायर जो फटफट की आवाज को कम से कम जैट इंजन की आवाज के बराबर ऊंचा करे। १२. शॉक एब्जाबेर की जगह शॉक प्रोड्यूसर हो क्योंकि पीछे बैठी सवारनी को जितने धक्के लगें मोटर साइकिल यात्रा को उतना ही शुभ माना जाता है। १३. दायें हैंड वाले रियरव्यू मिरर के साथ लगे उपकरण से चाहने पर पीछे की गाड़ियों की ओर धूल फैंकी जा सके।

लाखों दीवानों के लिये

खुशखबरी





अब दीवाना लेट नहीं होगा

और नई सजधज के साथ निश्चित समय पर आप को मिलता रहेगा।

कई क्रांतिकारी परिवर्तनों के साथ दीवाना को पहली अक्तूबर (1.9.80) से पाक्षिक किया जा रहा है. अब पत्रिका का साइज़ $\frac{23 \times 33}{16}$ होगा. और पृष्ठ संख्या 64 होगी. सभी स्थाई फीचर तो आप को मिलेंगे ही जैसे. मोटू-पतलू, सिलबिल-पिलपिल, फैंटम, चाचा बातूनी की 'आपस की बातें'. काका के कारतूस. गरीब चंद की डाक, खेल खेल में, क्यों और कैसे, वर्ग पहेली, चुटकुले तथा मनोरंजक कहानियां. बारह मसाले की इस चाट को और चटपटा बनाने के लिए दीवानगी से भरपूर नये स्तम्भ प्रस्तुत किए जाएंगे.

और हर अंक की विशेषता होगा उसके साथ दिया जाने वाला बड़े साइज़ का एक रंगीन पोस्टर।

एक विशेष बात *आज हर चीज के दाम आसमान को छू रहे हैं. महंगाई के इस जमाने में खुद घाटा उठा कर हम दीवाना को आप तक पहुंचाते रहे हैं अब इसे रंगीन और अधिक मनोरंजक बनाने पर जो खर्च बढ़ेगा उस का कुछ भाग आपके कंधों को भी उठाना पड़ेगा. 1.9.80 (अंक 15) से दीवाना की एक प्रति का मूल्य होगा, 1·25 रु. यह मामूली सी वृद्धि पत्रिका के सुन्दर गैटअप, महंगे कागज और उत्तम रंगीन छपाई के सामने कुछ भी नहीं. दीवाना के लाखों प्रेमियों और पत्र विक्रेताओं ने आज तक हमें जो सहयोग दिया है. उसके लिये हम उन के आभारी हैं और आशा करते हैं कि भविष्य में वे सदा दीवाना के दीवाने बने रहेंगे.*



पहली अक्तूबर के बदले हुए दीवाना के पहले शानदार अंक की कापी पहले से बुक करवा लीजिये.

काका के कारतूस

प्रश्न 'दीवाना' के दीवानों के, उत्तर काका हाथरसी के



विष्णु नरायण अरोड़ा, फर्रुखाबाद

प्र० : पढ़ते-लिखते समय यदि प्रेमिका की याद आ जाए तो ?

उ० : पढ़ना-लिखना छोड़कर, काम करो यह मित्र,
उस कापी पर खींचिए, माशूका के चित्र ।

ओम प्रकाश सोनी, जसवन्त गढ़ (राज०)

प्र० : काकाजी, आप भी किसी के चमचे है क्या ?

उ० : राजनीति में कुशल हम, गिरगिट से हुशियार,
काका चमचे उसी के, जिसकी है सरकार ।

केवल प्रकाश 'दुआ', काशीपुर

प्र० : इच्छाओं को दबा देना चाहिए या उनकी पूर्ति के लिए संघर्ष करना चाहिए ?

उ० : इच्छा को मत मारिए, प्राप्त कीजिए लक्ष,
देखो इंदिरा गांधी हैं, दृष्टान्त प्रत्यक्ष !

टट — पा

विनोद साहनी, बरेली (उ० प्र०)

प्र० : कुछ लड़कियां अपने हुस्नो-शबाब की टार्च जलाकर लड़कों के सामने लाइट क्यों फेंकती हैं ?

उ० : हुस्न जवानी की चढ़े, जिस दम तन पर ताप,
बिना टार्च लाइट जले, क्या कर लेंगे आप ?

उमेश कुमार काम्बले, रायगढ़ (म० प्र०)

प्र० : नशा कौन सा सबसे तेज होता है ?

उ० : भांग-सुरा के नशा से मानव करे प्रलाप,
धन-दौलत का नशा है, सभी नशों का बाप ।

वीरेन्द्र कुमार 'निराश', मंडला (म० प्र०)

प्र० : इंसान चाँद तक पहुंच गया तो औरत ?

उ० : मर्द चाँद पर चढ़ गया, बना न कुछ भी काज,
है मर्दों की चाँद पर, नारी शासन आज ।

गुलशन अरोड़ा, बाड़ा हिंदूराव-दिल्ली

प्र० : अगर महफिल में शमां न होती तो परवाने कहां जाते ?

उ० : बिना शमां के महफिल में माहौल जुदा होते,
कुछ चमकते चेहरों पर, परवाने फिदा होते ।

ओम प्रकाश गुप्त, गोरखपुर

प्र० : काकाजी, कोई तमन्ना अधूरी रह जाए तो ?

उ० : मुन्ना तेरी तमन्ना जो रह गई अपूर्ण,
निश्चय, अगले जन्म में हो जायेगी पूर्ण ।

गेंदालाल आर्य इच्छावरी, डिवाई (बु० शहर)

प्र० : काकाजी, आपके कितने बच्चे हैं और काकी के कितने हैं ?

उ० : मेरे-तेरे प्रश्न पर रहते हम खामोश,
फिफ्टी-फिफ्टी समझकर, कर लेते संतोष ।

बब्बूजो, पो० आहरा (पुरुलिया)

प्र० : आपकी ऐसी कौनसी इच्छा है जो इस जन्म में पूरी होने की उम्मीद नजर नहीं आती ?

उ० : गई जवानी हाथ से, चढ़ा बुढ़ापा दुष्ट,
नहीं मिलेगी जन्म भर, फिर भी हम संतुष्ट ।

अरुण पासवान, भिस्तीपारा, धनबाद

प्र० : काकाजी, हड़तालों के इस दौर में आप प्रश्नोत्तरों की हड़ताल क्यों नहीं कर देते ?

उ० : प्रश्नोत्तर भेजे नहीं, कुछ दिन तक इस साल,
चिल्ली जी चिल्ला पड़े, टूट गई हड़ताल ।

मोहम्मद अयूब मारी, सुजानगढ़

प्र० : काकाजी, हम आपसे कविता करना सीखना चाहते हैं ।

उ० : 'दीवाना' से दीवाने, तुकबन्दी सीख रहे हैं,
कारतूस पढ़के, लड़के कविताएं लिख रहे हैं ।

महेश बग्गा, इंदौर (म० प्र०)

प्र० : सुना है, आप शादी करके पछता रहे हैं और इसी गम में अपनी दाढ़ी बढ़ा रहे हैं ?

उ० : नहीं कोई पछतावा प्यारे, दाढ़ी देती रहती दम,
कभी बढ़ालें, कभी मुड़ा दें, क्या हैं राजनारायण हम ?

बलविन्द्र कुमार सोढ़ी, रामनगर, करनाल

प्र० : किसी बेवफा की शादी पर कौन सा तोहफा देना चाहिए ?

उ० : कुछ काम ऐसा कीजे, उसका भी दिल पसीजे,
हो बेवफा की शादी, तोहफा वफा का दीजे ।

प्रदीप कुमार मीर, मधुबन (बिहार)

प्र० : क्या किसी की गुलामी करना, नीच कार्य है ?

उ० : कोई बेगम सुन्दरी, तुम्हें बताए काम,
हो जाये जीवन सफल, उसके बनो गुलाम ।

राजकुमार, दुलियाजान (असम)

प्र० : सिनेमाहाल में नई फिल्म शुक्रवार को ही क्यों लगती है ?

उ० : शुक्रवार को इसलिए, वितरक फिल्म लगायं,
शुक्र खुद का प्राप्त हो, वर्षों फिल्म चलायं ।

रामप्रताप 'अधीर', शाहजहाँपुर

प्र० : इश्क करने में रिस्क क्या है काका ?

उ० : मजे इश्क के कुछ वही जानते हैं,
जो सिर को सलामत नहीं मानते हैं ।

के० एन० कश्यप, रुद्रपुर (नैनीताल)

प्र० : घर का दरवाजा अन्दर से, दुकान का बाहर से, तो भाग्य का दरवाजा किधर से खुलता है ?

उ० : घर दुकान के सूक्ष्म हैं, यह ताला है ग्रेट,
मत्री पद की कलम से, खुले भाग्य का गेट ।

मोहम्मद अयूब, बुरहानपुर (म० प्र०)

प्र० : ईद का चांद, तरबूज की पतली फांक जैसा क्यों दिखाई देता है ?

उ० : तरबूजे को काटकर, खुदा खुद-ब-खुद खायं,
एक फांक को दिखाकर, बन्दों को ललचायं ।

अशोक कुमार जाधव, पारस (महाराष्ट्र)

प्र० : देश पर मरने वालों को शहीद कहा जाता है, तो हुस्न पर मरने वालों को ?

उ० : शहीद हों देश पर, वे देश के होते हैं दीवाने
मरें जो चन्द्रमुखियों पर, वे शम्मा के हैं परवाने ।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें ।	**काका के कारतूस** दीवाना साप्ताहिक ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२

दीवाना-कैमल

रंग प्रतियोगिता

निःशुल्क प्रवेश

पुरस्कार जीतिए:

कैमल–पहला इनाम ३० रु.
कैमल–दूसरा इनाम २० रु.
कैमल–तीसरा इनाम १० रु.
कैमल–आश्वासन इनाम ५
दीवाना-आश्वासन इनाम ५
कैमल–सर्टिफिकेट १०



केवल १२ वर्ष तक के विद्यार्थी प्रतियोगितामें शामील हो सकते हैं। उपर दिये गये चित्रमें अपने मनचाहे कैमल रंग भर दिजिए। अपने रंगीन प्रवेश-पत्र नीचे दिये गए पत्ते पर भेजिए, दीवाना, ८-बी, बहादूर शहा जाफर मार्ग, नयी दिल्ली ११०००२

परिणाम का निर्णय अन्तिम निर्णय होगा। और कोई भी पत्रव्यवहार, नहीं किया जाएगा।

नाम .... **उम्र** ....

पता ....

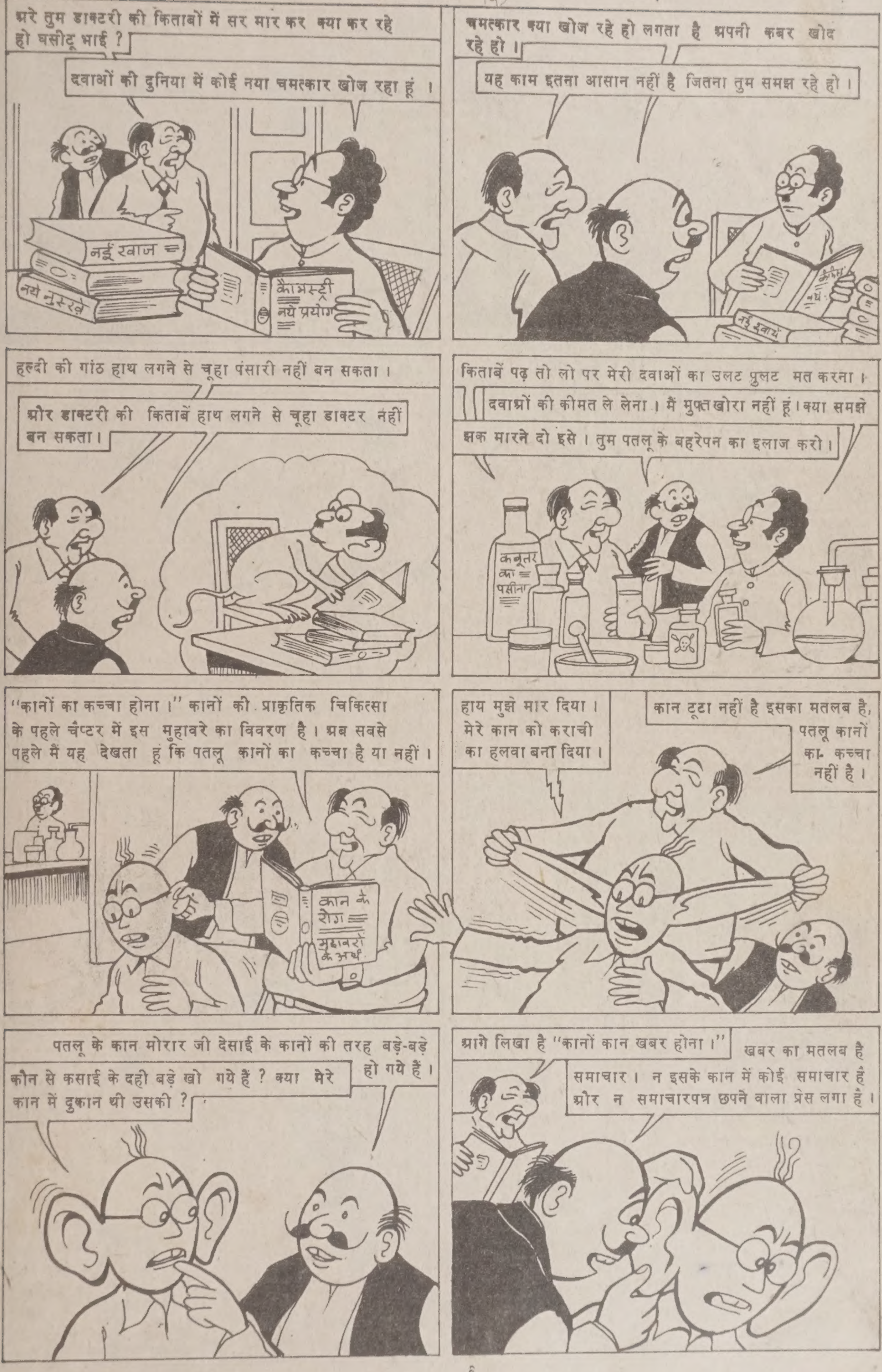
कृपया ध्यान रखिए कि पूरा चित्र पेंट किया जाये।

चित्र भेजने की अंतिम तारीख: १५-१०-८०

CONTEST NO.16

VISION


मोटू पतलू
पिछले कुछ दिनों से पतलू कानों से ऊंचा सुन रहा है । उसका यह बहरापन अब दूसरों के लिये सर दर्द बन गया है । और उसके सभी मित्रों का जीना हराम हो गया है । झटका आज कल प्राकृतिक चिकित्सा पर रिसर्च कर रहे हैं । और उन्होंने आग पानी और हवा द्वारा बहरेपन के इलाज का नुस्खा ढूंढ़ लिया है ।
मिल गई । मिल गई । बहरेपन की दवा मिल गई ।
क्या कहा ? मेरे पेन की दवात मिल गई ।
प्राकृतिक चिकित्सा कानों की बीमारियों का इलाज
अबे कनखजूरे, तेरे कान में गोबर भरा है क्या ? डाक्टर झटका ने तेरे कानों का इलाज ढूंढ़ा है ।
यह तुम्हें पागल कर देगा ।
आखरी सांस
नुसखे
दवायें
नये नुसखे
आंखें
पाँव रोग
गानों का साज ढूंढ़ा है ? कौन से गानों का साज ढूंढ़ा है । मैं तो बिना साज के लता मंगेशकर से अच्छा गा सकता हूं ।
क्यों मगज मार रहे हो इस बहरे से ।
कागज मार रहे हो चहरे पर ! कमाल करते हो । भला कोई कागज भी मार सकता है ?
तुम झक मार सकते हो तो क्या हम कागज नहीं मार सकते ।
कानों की प्राकृतिक चिकित्सा में पहले प्रचलित मुहावरों के हिसाब से विभिन्न प्रकार के कानों का विवरण है और कानों की विशेषतायें बताई गई । नों का कच्चा होना कानों कान खबर न हो ना । ड़ झाड़ना । एक कान से सुनना दूसरे से निकाल देना । दीवारों के भी कान होना ।
कानों के रोग
नुसखे
सरकार ने डाक्टरों और वैज्ञानिकों को प्रोत्साहन देने के लिये उनके आविष्कारों और नई-नई दवाओं पर बड़े-बड़े पुरस्कार देने का फैसला किया है । डाक्टर झटका अब तक कई नई दवाओं पर सफल प्रयोग कर चुके हैं । और वह सरकार के पास भेजी जाने के लिये तैयार हैं ।
डाक्टर झटका प्राकृतिक चिकित्सा के चक्कर में फंस रहे हैं । इस बीच इन्हीं की प्रयोगशाला में इन्हीं की दवाओं से मैं
क्यों न कुछ नई-नई दवाओं की खोज कर डालूं और अपने नाम के झंडे गाड़ दूं ।
और यह काम इतना मुश्किल भी तो नहीं है । सभी कुछ तो कैमिस्ट्री की किताबों में लिखा है । मेरा काम तो कुछ दवाओं को उचित अनुपात में मिलाना है ।
मॉडर्न साइंस
गोप के आंसू
पत्थर का अचार


अरे तुम डाक्टरी की किताबों में सर मार कर क्या कर रहे हो घसीटू भाई ?
दवाओं की दुनिया में कोई नया चमत्कार खोज रहा हूं ।
नये नुस्खे
कैमिस्ट्री नये प्रयोग
चमत्कार क्या खोज रहे हो लगता है अपनी कबर खोद रहे हो ।
यह काम इतना आसान नहीं है जितना तुम समझ रहे हो ।
नई दवायें
हल्दी की गांठ हाथ लगने से चूहा पंसारी नहीं बन सकता ।
और डाक्टरी की किताबें हाथ लगने से चूहा डाक्टर नहीं बन सकता ।
किताबें पढ़ तो लो पर मेरी दवाओं का उलट पुलट मत करना ।
दवाओं की कीमत ले लेना । मैं मुफ्तखोरा नहीं हूं । क्या समझे
झक मारने दो इसे । तुम पतलू के बहरेपन का इलाज करो ।
कबूतर का पसीना
"कानों का कच्चा होना ।" कानों की प्राकृतिक चिकित्सा के पहले चैप्टर में इस मुहावरे का विवरण है । अब सबसे पहले मैं यह देखता हूं कि पतलू कानों का कच्चा है या नहीं ।
कान के रोग मुहावरों के अर्थ
हाय मुझे मार दिया । मेरे कान को कराची का हलवा बना दिया ।
कान टूटा नहीं है इसका मतलब है, पतलू कानों का कच्चा नहीं है ।
पतलू के कान मोरार जी देसाई के कानों की तरह बड़े-बड़े हो गये हैं ।
कौन से कसाई के दही बड़े खो गये हैं ? क्या मेरे कान में दुकान थी उसकी ?
आगे लिखा है "कानों कान खबर होना ।" खबर का मतलब है समाचार । न इसके कान में कोई समाचार है और न समाचारपत्र छपने वाला प्रेस लगा है ।


अगला मुहावरा है,"दीवारों के भी कान होते हैं।
इसका मतलब, पतलू दीवार है।
और यह दीवार पतलू है।
और तुम पतलू का इलाज न कर सको तो दीवार का इलाज शुरू कर दो।
आगे लिखा है' "कान पड़ी आवाज सुनाई न देना।"
ठीक लिखा है यही तो इसकी असली बीमारी है।
आगे लिखा है "एक कान से बात सुनना, दूसरे से निकाल देना।"
हाँ इसके कानों का चैक अप करके इस खराबी की जड़ पकड़ो।
कान के रोग
जड़ क्या पकड़ूं। इसके कान में तो इंडिया गेट की तरह आर-पार दरवाजा खुला है।
अब समझे, यह एक कान से सुनता है तो वह दूसरे से क्यों निकल जाता है ?
कानों के लिये यह मरहम बनाने का नुस्खा लिखा है किताब में। पहले एक किलो गाय के गोबर में आधा किलो तारकोल मिलाओ। और मिट्टी का तेल डालकर आहिस्ता-आहिस्ता चलाते रहो।
यह कानों के मरहम का नुस्खा है या सड़क पर लेप करने वाला प्लास्टर बनाने की विधि है ?
दूसरी ओर घसीटा राम अब डाक्टर झटका की लैबोट्री में नई-नई दवाओं के प्रयोग कर रहा था।
वाह-वाह कमाल हो गया। इन दवाओं को मैं आपस में मिलाऊं तो कद लम्बा करने वाली अजीब--ओ - गरीब दवा बन जाएगी।
XSS
फार्मूला 99
DAN
दवा बनकर तैयार हुई, तभी वहां एक जरूरतमन्द आ गया।
डाक्टर साहब मेरा कद बहुत छोटा है। कोई ऐसी दवा दीजिये जिससे मेरा कद बड़ा हो सके।
चिड़िया की चोंच
अब तुम जया भादुड़ी हो। मैं तुम्हें अमिताभ बच्चन बना दूंगा दवा पिलाकर।
XSS
पूरी दवा बहुत स्ट्रोंग हो और तुम इसे बर्दाश्त न कर सको। इसलिये पहले आधी दवा पीकर देखो



उस आदमी ने जैसे ही दवा पी......
...... उसे एक तेज झुरझुरी सी आई......
और देखते ही देखते उसकी एक टांग की लम्बाई बढ़ती चली गई ।
कह रहे थे तुम्हें जया भादुड़ी से अमिताभ बच्चन बना दूंगा । यह क्या शुतुरमुर्ग बना दिया है मुझे!
अरे बाप रे ! आधी दवा का आधा असर इस प्रकार हुआ है !
अब बाकी आधी दवा पिलाओ ताकि दोनों टांगें एक जैसी हो सकें ।
बाकी आधी दवा की शीशी तो टूट गई । और जिन दवाओं के मिश्रण से वह बनी थी वह समाप्त हो चुकी हैं ।
लम्बी टांग आरी से काटने के अतिरिक्त मेरे पास और कोई उपाय नहीं है ।
बेड़ा गर्क हो तुम्हारा । आरी से अपनी गर्दन काट लो । तुम्हारी खाल में मसाला भरने के लिए मैं अभी अपने साथियों को लेकर आता हूं ।
यह तो बहुत खतरनाक दवाई रही । अब जरा कोई नर्म और स्लो एक्शन वाली दवा बनाता हूं ।
हां, यह ठीक रहेगी । कील मुहासे दूर करने वाली क्रीम । कील मुहासों से युवा पीढ़ी बहुत परेशान है । अच्छी भली सूरत वाले, जो फिल्म स्टार बनने योग्य होते हैं कील मुहासों के कारण अपनी भद्दी शक्ल पर आंसू बहाते रहते हैं ।
कील मुहासे दूर
लो बन कर तैयार हो गई दवा । इसमें चिड़िया की चोंच, बुलबुल के पर और मगरमच्छ के आंसू जैसी कीमती दवाइयां पड़ी हैं । अब देश में कोई बदसूरत नहीं रहेगा ।
इस दवा के आविष्कार के लिए सरकार मुझे लाखों का इनाम देगी!


डाक्टर साहब, मेरे मुंह पर यह एक बहुत बड़ा मुहासा है, क्या आप इसे दूर करने के लिए कोई दवा दे सकते हैं ?
क्यों नहीं ? अभी-अभी यह दवा बनाई है । तुम पहले खुश किस्मत हो जो इसका लाभ उठाओगे ।
उंगली से मल लो अच्छी तरह । मुहासा ऐसे गायब होगा जैसे गधे के सर से सींग ।
वास्तव में दवा जादू के असर वाली बनी थी ।
मुहासा देखते ही देखते छोटा होने लगा था ।
छोटा होते-होते वह बिलकुल मिट रहा था ।
और अब बिलकुल गायब हो गया था ।
वाह वाह ! देखा क्या कमाल की दवा बनी है ।
पर दवा का असर अभी कम न हुआ था । अब वह उस आदमी के सर को छोटा करने लगी थी ।
अब उस आदमी का पूरा सर दवा के लिए एक बड़ा मुहासा बन गया था और दवा उसके सर को बहुत तेजी से छोटा किये जा रही थी ।
अरे यह क्या जालिम दवा बनी है ! मुहासा के बाद अब इसके पूरे चेहरे का कबाड़ा किये डाल रही है ।
और देखते ही देखते उस आदमी का सर अब बिलकुल गायब था ।
मैं पूछता हूं, यह तुमने मुहासा दूर किया है मेरा, या मुझे सरकटा भूत बना दिया है ।
?
अपने आपको डाक्टर कहते हो । मैंने तुम्हारे जैसा उल्लू आज तक नहीं देखा !
मैं तुम्हें कच्चा चबा जाऊंगा ।
चबाओगे काहे से ? न तुम्हारे मुंह है न दांत ।
ठहरो । यह मेरी आंखों का धोखा है, लगता है मेरी आँखों का बेड़ा गर्क हो गया है जो तुम मुझे बिना सर के दिखाई देने लगे हो ।


लो कोला, कोका कोला, पैरसी कोला, रिफ्रेशिंग कोला, नोवा कोला, और इंजन का कोयला डालकर बनाई गई। आंखों की चमत्कारी दवा. डाक्टर झटका की बनाई यह दवा जरूर
मेरी आंखों को ठीक करेगी।
आँखों की बेनजीर दवा
टू-इन-वन आई ड्राप्स
उपले की राख
कबूतर की बीट
रस
चूर्ण
घास का अचार
घसीटाराम ने जैसे ही दवा अपनी आँखों में डाली, दवा का असर शुरू हो गया।
लगता है दवा आँखों के रास्ते पेट तक उतरती चली गई है।
"टू-इन-वन" रेडियो और टेपेरेकार्डर तो होते हैं "टू- इन-वन आई ड्राप्स" का क्या मतलब हो सकता है ?
मतलब साफ था घसीटाराम ने खिड़की में से सड़क पर जाते ऊंट को देखा।
और फिर मुहांसे के इलाज के लिए आये मरीज की ओर देखा, तो उसकी आंखें "टू-इन वन" देख रही थीं।
फिर उसने दीवार पर लगी अपनी तस्वीर की ओर देखा…
और फिर उल्लू की ओर देखा तो 'टू-इन-वन'' का मतलब और साफ हो गया था।
इसके बाद उसने शीशे में अपनी सूरत देखी तो उसकी आँखें इंडियागेट जितनी चौड़ी हो गईं।
मेरी लुटिया डूब गई। जीते जी मेरा जनाजा निकल गया। बेड़ा गर्क हो डाक्टर झटका का किस की दवा पर मैंने भरोसा किया।
मेरी अपनी आँखें संतरे की फांकें बन गई हैं।
तुम किस बात पर रो रहे हो ? मुझे तो कुछ दिखाई नहीं देता। मेरी आंखें मुझे लौटा दो।
यह प्राकृतिक चिकित्सा की किताब हाथ लगी है। एलोपैथी की बजाये मुझे भी अब इसी पर भरोसा करना चाहिए। आंखों के इलाज के लिये लिखा है, पहले आंखों को गौ मूत्र से साफ करो। यह मोरारजी देसाई की लिखी पुस्तक है, क्या ?
आंख के रोगों की प्राकृतिक चिकित्सा
आगे लिखा है, फिर आंखों को मूंगफली के छिलके से रगड़ो, फिर करेले की चटनी को किसी बर्तन में गर्म करके आंखों को उसकी भाप का सेंक दो। बड़ा लम्बा इलाज है। अंत में लिखा है। एक बड़ा गढ़ा खोद कर मिट्टी को शीरे से गीला करो और रोगी को आराम से गढ़े में लिटाकर उसे गर्दन तक अच्छी तरह शीरा मिली मिट्टी में दबा दो।


गढ़ा खोद लिया, यहाँ तक मैंने अपने आप ही खुद को मिट्टी में दबा दिया । अब आगे तुम मेरी मदद करो भाई ।
तुम ने भाई कहा है, तो एक उल्लू, दूसरे उल्लू की मदद जरूर करेगा ।
दूसरी ओर पतलू के बहरेपन का इलाज करते-करते यह हालत हो गई थी
मेरे कान को कैमिस्ट की दुकान बना दिया है । मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो । मुझे नहीं करवाना है अपने कानों का इलाज । सुन रहे हो मेरी आवाज़ ।
सुन रहे हो मेरी अवाज़
और पतलू की आवाज़ डाक्टर झटका और मोटू को ऐसी सुनाई दी थी, और उसके कानों के पर्दों से ऐसे टकराई थी कि अब वे दोनों खुद पतलू से अधिक बहरे हो गये थे ।
क्या कहा ? बुन रहे हो मेरी जुराब ?
यह कह रहा है, चुन रहे हो मेरे गुलाब ।
मैं कह रहा हूँ, सुन रहे हो मेरी आवाज़ ।
मैं बाज़ आया तुम्हारे इलाज से ।
क्या कहा, मैं प्याज लाया तुम्हारे लिए आज से ?
मुझे तंग किया तो मैं तुम्हारे कान के कीड़े झाड़ दूंगा ।
क्या कहा? मुझे तकिया दिया तो मैं तुम्हारी दुकान के कपड़े फाड़ दूंगा ?
पता नहीं क्या बके जा रहा है यह बहरा ।
और बहरों की यह पूरी बटालियन घसीटा राम के पास पहुंची तो प्राकृतिक चिकित्सा के चक्कर में उसने अपनी यह हालत बना ली थी ।
पूरा का पूरा धरती में गढ़ा है ।
मैंने कहा था न कि यह अपनी कबर आप खोदेगा ।
पूरा का पूरा चर्खी पे चढ़ा है ? अपना गोबर आप धो देगा ? क्या मतलब है तुम्हारा इस बात से ।



आगामी अंक में अपने इन प्रिय कलाकारों से फिर मिलिये ।

तीन जासूस और खोपड़ी का रहस्य

भाग- ४

'यह तो मैं नहीं जानता।' राजू ने उसे बताया, 'लेकिन इस दिशा में कोशिश तो करके देखें ! यही एक सूत्र है हमारे पास आगे बढ़ने के लिए और कोई चारा नहीं है। शायद हम कुछ ऐसे प्रश्न पूछें जो पुलिस पूछना भूल गयी हो।'

'चलो तो पहले क्या करें ?' श्याम ने प्रश्न किया।'

'पहले तो थाने से हमें जग्गी की बहन का पता पूछना है।'

नीचे से राजू की अम्मां का ऊंचा स्वर आया. 'अरे लड़को आओ चाय पी लो।'

कुछ ही मिनटों में तीनों नीचे टेबल के चारों ओर बैठे थे ! उनके सामने चाय की प्यालियां थी और बीच में प्लेटों में दाल, समोसे और बिस्कुट। जब प्लेटें साफ हो गयीं और प्यालियां खाली हो गयीं तो राजू की मां आई। उन्होंने तेज नजरों से राजू को देखा, 'राजू, तू मेरा दिमाग खराब करके रहेगा ! पहले एक मनहूस खोपड़ी ले आया। उससे छुटकारा पाया तो बंजारों को पीछे लगा लिया। तुम लड़के कर क्या रहे हो ?'

'बंजारे ?' तीनों के मुंह से एक साथ निकला !

'हां, एक मूंछों वाला अजीब से कपड़े पहने बंजारा यहाँ आया था वह तुझे पूछ रहा था ! तुम यहां थे नहीं।'

'तो ?' राजू ने पूछा।

'वह तेरे लिए एक संदेश छोड़ गया··· क्या अजीब सा सन्देश था !···हां···वह कह रहा था 'राजू से कहना है कि जब बिल्ली के पीछे कुत्ते पड़ जाते हैं तो वह जान बचाने के लिए पास के पेड़ तक जोरदार छलांग लगाती है।'

राजू ने सिर खुजलाया। श्याम व महिन्दर को थूक निगलने में भी कठिनाई महसूस हुयी। तीनों में से किसी को राजू की मां से आंखें मिलाने का साहस नहीं हुआ, जब वह कप और प्लेटें उठाकर गयीं तो तीनों ने चैन की सांस ली।

'क्या मतलब है इसका ?' महिन्दर बड़बड़ाया।

'शायद पहेली है या बंजारा बोली की कोई कहावत है पता नहीं। शायद वह कह रहा था कि हमारी हालत ऐसी ही है जैसी बिल्ली की जिसके पीछे कुत्ते पड़े हों। हमें दौड़ लगानी है जान बचाने के लिए।'

छलांग लगाने का अर्थ हमें जल्दी से जल्दी धन का पता लगाना होगा।' श्याम ने भी अन्दाजा लगाया।

राजू ने टेलीफोन उठा कर पुलिस स्टेशन से जग्गी की बहन का पता पूछा। कुछ देर में ही उत्तर मिल गया। वह प्रकाश कालोनी नं० ४२२ में रहती थी।

जब तीनों प्रकाश कालोनी पहुंचे तो पूछते-पूछते नं. ४२२ तक पहुंचने में काफी देर भटकना पड़ा। कॉलोनी में झुग्गी झौंपड़ियां अधिक थीं। उन्हीं की आयु के एक लड़के ने बताया कि कॉलोनी रेगुलर नहीं हुई है। इसीलिए लोगों ने पक्के मकान नहीं बनवाये हैं। कारपोरेशन कॉलोनी की जमीन खाली करवाकर वहाँ बिजली कर्मचारियों के लिए क्वार्टर बनाना चाहती थी कॉलोनी के लोग अदालत में अन्तिम निर्णय की प्रतीक्षा में थे अतः यहां सब अनिश्चितता की स्थिति में रह रहे थे।

खैर उन्हें शान्ति देवी का मकान मिल गया। मकान साधारण देहाती टाइप का था। दीवारें मिट्टी की बनी थीं और ऊपर फूस का छत्त था। शान्ति घर पर ही मिल गई। शांति अधेड़ उम्र की औरत थी। बाल कुछ सफेद हो चले थे। चेहरे पर झुर्रियां भी हल्की रेखायें बनाने लगी थी। जब राजू ने उसे बताया कि वह उसके भाई जग्गी के बारे में कुछ पूछने आये हैं तो पहले तो वह हिचकिचाई लेकिन फिर कुछ सोचकर उन्हें अन्दर ले गयी। निवास का कमरा साधारण था। फर्श गोबर से लीपा हुआ था। चारों दीवारें पुराने कैलेन्डरों के देवी देवताओं के चित्रों से ढकी पड़ी थीं। चित्र दीवारों पर चिपकाये हुए थे कमरे में दो चारपाइयां एक कोने में एक सन्दूक और उस पर सिलाई की मशीन, कुछ कटे व अधसिले कपड़े तथा ऊन के गोले व बुनाई का मामान तह की हुई रजाई पर रखा था। एक चारपाई खाली थी, दूसरी पर गद्दा व चद्दर बिछी थी। एक दरवाजा पीछे की ओर जाता था शायद रसोईघर होगा।

तीनों खाली चारपाई पर बैठ गये वह दूसरी चारपाई पर बैठ गयी ! राजू ने गला खंखार कर बात शुरू की, "माता जी, हम पुलिस की ओर से नहीं आये हैं। हम एक ऐसे आदमी की सहायता कर रहे हैं जिसे मदद की जरूरत है। वह मुसीबत में है। हम आपके भाई के बारे में काफी कुछ जान गये हैं। यह भी जानते हैं कि बैंक में डाका डालने के बाद दो सप्ताह वह आपके पास रहा जिससे सन्देह की छाया आप पर भी पड़ी ! डाके के तीस हजार रुपये बरामद न होने के कारण आपकी निर्दोषता पर अब तक प्रश्न चिन्ह लगा हुआ है।"

देवी देवताओं की तस्वीरों से अटी दीवारों की ओर इशारा करते हुये राजू ने आगे जोड़ा, "इस प्रश्न चिन्ह के कारण आपके श्रद्धालू और धर्मपरायण हृदय को जो ठेस पहुंची है उसे हम समझते हैं। यदि आप हमारी सहायता करेंगी तो न केवल हम विपत्तियों के भंवर में फंसे एक अज्ञात व्यक्ति की सहायता कर पायेंगे अपितु आपके निष्कलंक चरित्र पर मंडरा रही काली छाया को भी हटा सकेंगे।"

शांति के चेहरे पर अजीब भाव आये ! उसने श्याम की तरफ मुड़ कर राजू की ओर इशारा करते हुये कहा, "क्या यह हमेशा ऐसे ही बात करता है ?"

श्याम मुस्कराया, 'राजू पुस्तकें बहुत पढ़ता है इसलिये जब कभी बोलते बोलते अपनी रौ में बह जाताहै तो ऐसी किताबी भाषा बोलने लग पड़ता है।'

राजू झेंप गया।

शांति ने कहा, "खैर, मेरी समझ में नहीं आता कि मै क्या मदद कर सकती हू। मुझे पता नहीं लूट की रकम कहां छुपा रखी है जैसा कि मैंने उस समय पुलिस को बता दिया था। पुलिस के आने तक मुझे तो वह भी पता नहीं था कि वह डकैत है।"

राजू ने निवेदन किया, "जरा याद करें आप वही बातें हमें बताइये जो आप पुलिस को बता चुकी हैं। शायद हमें कुछ नुकता नजर आये।" "कोशिश करूंगी।" शांति ने

श्रांखें मुंदकर भूतकाल में झांकने का प्रयत्न करते हुये कहा, "छः या सात साल पहले की बात होगी ! जगजीत यानि जग्गी मेरा भाई मेरे पास आया ! उस समय मेरे पति जिन्दा थे। वह रद्दी अखबार बेचने का काम करते थे। अठारह वर्ष की आयु में घर से जाने के बाद जग्गी एक दो बार ही मुझसे मिला होगा। मुझसे उसने यही बताया कि वह भोपाल में किसी कम्पनी में नौकरी करता है। वह हमारे पास आया और घर पर ही यहीं पड़ा रहता था। बाहर कतई नहीं जाया करता था।

"अब मैं जानती हूं कि वह बाहर क्यों नही जाता था। वह पुलिस से बच रहा था। मैं यही सोचती रही कि शायद जेब में पैसे नहीं होंगे इसलिये बाहर नहीं जाता। इसी बीच मेरे पति अचानक बीमार पड़े। उन्हें अस्पताल ले जाना पड़ा ! मैं उनके पास लगभग एक सप्ताह हस्पताल में रही, उस दौरान इस घर में जग्गी अकेला ही रहा। तो उसने एक काम जरूर किया फ़र्स के छत की मरम्मतकीग्ररकोलिपाई की और दीवारों पर यह चित्र उसी ने चिपकाये थे। अब मुझे याद आता है कि जब उसे मेरे पति को भर्ती कराने हस्पताल आना पड़ा व एक दो बार जब वह उन्हें देखने आया तो हमेशा काले चश्मे पहन कर और नीची सी टोपी पहन कर आया ! जरूर ही वह पहचाने जाने के डर से ऐसा करता होगा।

"इस बीच मेरे पति को हालत बिगड़ती गयी। डाक्टरों ने जवाब दे दिया। ऐसी स्थिति में एक दिन घर गयी तो पाया कि जग्गी जाने की तैयारी कर चुका है। सूटकेस तैयार करके बैठा था। मुझे आश्चर्य तो हुआ कि ऐसी विपदा की घडी में जब उसका मेरे साथ रहना जरूरी था वह जा रहा था। मेरे रुकने की विनती भी कुछ बहाना बना कर उसने ठुकरा दी।

"अब सोचती हूं उसे डर के मारे ही जाना पड़ा मेरे पति की मृत्यु पर शोक प्रकट करने लोग आते और शव यात्रा में भी शामिल होना पडता जहां उसके पहचाने जाने का खतरा था। आगे मुझे उसकी कोई खबर नहीं लगी। कुछ पता लगा तो तब ही जब पुलिस मेरे घर आई।" राजू ने प्रश्न किया, "जाते समय अपने दोबारा आने के बारे में कुछ कहा उसने !"

'मुझे ठीक से याद नहीं।' शांति ने उत्तर में कहा, मैं वैसे ही परेशानियों से घिरी थी। कुछ ऐसा तो उसने जरूर कहा था कि जीजी तुम यह मकान न छोड़ना ताकि मैं दोबारा आऊं तो तुम्हारा घर ढूढने में कठिनाई न हो क्योंकि मेरा भी भोपाल में पक्का पता नही है।'

'राजू का चेहरा खिल उठा, 'अब मैं कह सकता हूं कि उसने पैसा यहीं इसी घर में कहीं छुपा रखा है। जब आप हस्पताल में थीं तो उसे काफी अवसर मिला होगा। मकान न छोड़ने के लिए कहना इस बात की पुष्टि करता है।'

शांति ने सिर हिलाया, 'पुलिस ने भी ऐसा ही सोचा और घर का कोना-कोना छान मारा लेकिन कुछ नहीं मिला।

राजू ने फिर दलील दी, 'उसने चालाकी से ऐसी जगह छिपा रखा है जहां पुलिस की आम तलाशी में न पहुंचा जा सके सौ सौ के तीस हजार रुपये के नोटों की कुल तीन गड्डियाँ ही तो बनेंगी। औसत तीन सौ पृष्ठों की किताब के बराबर जो कहीं भी छुपायी जा सकती है। यदि आपको आपत्ति न हो तो हम घर का निरीक्षण करना चाहेंगे।'

शांति को क्या आपत्ति हो सकती थी। मुख्य कमरे के पीछे किचन था जिसमें एक ओर बर्तन व पानी का ड्रम पड़ा था, बुझी हुई अंगीठी और पुराने ढंग का चौका देख कर बाहर आये। उन्हें कोई ऐसी जगह नजर नहीं आई जो पुलिस की निगाहों से बच सकती हो। निराश हो बाहर आये और जरूरत पड़ने पर फिर आने का वायदा कर शान्ति देवी से उन्होंने आज्ञा मांगी।

रास्ते भर कोई न बोला। चुपचाप अपने-अपने विचारों में खोये वे पैडल मारते रहे। उन्हें यहां से भी खाली हाथ लौटना पड़ रहा था।

राजू के घर पहुंचे तो राजू के पिता गेट पर ही खड़े मिल गये। वह शायद बाहर जा रहे थे, वर्दी में थे। ड्राइवर गैराज से कार बाहर निकाल रहा था।

उन्होंने पुकारा, 'राजू बेटे, तुमने दुकान से कुछ मंगवाया था ? एक आदमी बड़ा सा पार्सल छोड़ गया था।'

'पार्सल ?' राजू को आश्चर्य हुआ, 'नहीं मैंने तो कहीं से कुछ नहीं मंगवाया था।'

'तुम भूल गये होगे। मैंने उस आदमी से तुम तीनों के कमरे के दरवाजे के आगे रखवा दिया था। ऐसा ही बड़ा सा पार्सल है जैसे होम डिलीवरी सर्विस वाली दुकानें ग्राहकों के घर पहुंचाती हैं।' कमिश्नर साहब मुस्कराये।

तीनों अपनी साइकिलें पटक हैडक्वार्टर की सीढियां लपक कर चढ़े। सचमुच दरवाजे पर बड़ा सा पार्सल रखा था। [illegible] पेंसिल से लिखा था तीन जासूस को !

'क्या हो सकता [illegible]' प्रश्न [illegible]

'अन्दर न जाकर खोलने पर पता



लगेगा।' राजू भी हैरान था।

अंदर ले जाकर उन्होंने चारों ओर लिपटी सूतली काटी। बाहर का पैकिंग पेपर हटाया। अन्दर और पुराने अखबारों की पैकिंग थी। जल्दी-जल्दी अखबारों को हटा कर तीनों ने झांका तो उनकी आँखें फैल गईं और साँस गले में ही अटक गयी।

'हे भगवान मर गये।' श्याम कराह उठा।

राजू को भी आवाज निकालने के लिए गला खंखारना पड़ा।

'किसी ने···' वह बोला, 'बेताल की खोपड़ी वाला संदूक हमें वापिस भेजा है।'

उन्होंने संदूक को घूरा जिससे वह समझते थे उन्हें छुटकारा मिल गया है। वह उसे घूर ही रहे थे कि संदूक में से दबी सी आवाज आई, 'जल्दी करो···सुराग का पता लगाओ।'

बेताल की खोपड़ी ! संदूक में से उन्हें बोल रही थी।

कुछ सुराग लगा

अब क्या होगा ?' श्याम ने पूछा। तीनों युवा जासूस दो दिन पश्चात् अपने हैड क्वार्टर में एकत्र हुए थे। दो दिन पूर्व जब उन्हें अली बाबा का सन्दूक रहस्यमय ढंग से पार्सल द्वारा वापस मिला था तो किसी को भी आगे गुत्थी सुलझाने की रुचि नहीं हुई थी। वास्तव मे सन्दूक के दोबारा प्रकट होने से वे कुछ कुछ हतप्रभ रह गये थे।

अब वे सामने सन्दूक रखे विमूढ़ से थे कि इसका क्या किया जाये ?

'मेरी समझ में तो एक ही बात आती है' मोहिन्दर बोला, 'इस ट्रंक को हम [illegible] चंदेल के पास ले जायें। सब कुछ उन्हें बतलायें और वे जो ठीक समझेंगे वही करेंगे।'

श्याम सहमत था, यही ठीक है। 'राजू

तुम्हारा क्या ख्याल है ?' 'चलो ऐसा ही सही' राजू के स्वर में उत्साह नहीं था। लेकिन दिक्कत यही है कि हम जानते ही क्या हैं जो उन्हें बतावें ? केवल हमारे अनुमान और तुक्के ही तो हैं कि जग्गी ने बैंक से लूटकर पैसे अपनी बहन के घर छिपा रखे हैं।'

मोहिन्दर ने बात काटी, कुछ भी हो मेरे लिए तो तुक्का नहीं है पक्का अनुमान है । जिस दिन बैंक में डाका पड़ा, जग्गी उसी दिन अपनी बहन के पास गया था । पैसे उसके पास थे । उसे पकड़े जाने का डर था, अतः वहां से जाने से पहले उसने वहीं रकम छुपा दी । और जब डाके का मामला ठंडा पड़ जाये तो वह आकर पैसे निकाल चलता बने ।'

'इसके अलावा श्याम ने सोचा, 'अगर रकम उसने वहीं कहीं छुपाई तो वह कहां छुपाई ? यही एक सूत्र तो है हमारे पास ।'

राजू ने दोनों की ओर देखा । 'परसों बेताल की खोपड़ी बोली थी ।' श्याम को झुरझुरी हो आयी थी। अजीब भुतहा सी बात मोहिन्दर बोला 'कंपकपी पैदा हो गई थी ।'

'लेकिन वह बोली तो थी ।' 'इस वक्त तो मैं यह जानने की कोशिश में नहीं हूँ कि कैसे बोली थी ।' राजू ने कहा 'उसने हमें जल्दी करने और रहस्य सुलझाने के लिये कहा । इसका साफ मतलब है कि सन्दूक में ही कहीं भेद है ।' श्याम ने जिरह की 'अगर उस पत्र के अलावा भी कोई और भेद है तो पुलिस अपने आप पता लगा लेगी । उसके पास लेबोरेटरी है और विशेषज्ञ हैं ।' 'यह सही है' राजू ने सहमति प्रकट की' लेकिन जग्गी ने पत्र तो अलीबाबा को लिखा था। अलीबाबा के पास न लेबोरेटरी थी और न ही कोई विशेषज्ञ था । जग्गी को विश्वास था कि अलीबाबा सुराग पा जायगा···इसलिये हमें भी तब तक पहेली सुलझा लेनी चाहिए थी ।'

मोहिन्दर ने लम्बी सांस ली । कुछ भी हो भई राजू, मैं तो इस संदूक से तंग आ गया हूं । देखा इसके कारण जादूगर कोका का क्या हाल हुआ ? यह सन्दूक मुसीबत की जड़ है ।'

'जैसी तुम्हारी मर्जी' राजू ने हथियार डाल दिए ।

पुलिस स्टेशन टेलीफोन करने के लिए तीनों नीचे ड्राइंग रुम में गए । राजू की माताजी शौपिंग करने गई थीं । वहां कोई न था । राजू ने डायल घुमाया ।

'[illegible]लिस स्टेशन !' रिसीवर में अपरि-[illegible] [illegible]रदेरी आवाज आई ।

[illegible]

चन्देल से बात करनी है ।'

'चन्देल यहां नहीं हैं । वह बिल्ला के सिलसिले में आगरा गए हैं । एक दो दिन में आयेंगे । मैं हैडकांस्टेबल दारोगासिंह बोल रहा हूं ।'

'लेकिन···मुझे जरूरी बात करनी है । मुझे विश्वास है कि हमारे पास सन्दूक के बारे में सुराग···'

'भाड़ में जाए सन्दूक! उधर से कर्कश स्वर आया' देखो हम इस वक्त बहुत बिजी हैं । एक मर्डर केस ने हमारी जान आफत में डाल रखी है । हमें खाना खाने की भी फुर्सत नहीं है । बेकार हमारी परेशानियां मत बढ़ाओ ।'

'लेकिन इन्सपैक्टर चन्देल ने मुझे कह रखा है···।' राजू ने कहना शुरू किया ।

'चन्देल ने कुछ भी कह रखा हो वह उसी से कहना । मुझे और फोन न करना । मैं घास नहीं डालने वाला ।'

दूसरी ओर गुस्से से रिसीवर पटकने की आवाज आई ।

राजू ने फोन रखा और अपने साथियों की ओर देखा जो पास ही खड़े सारी बात सुन रहे थे ।

'श्याम ने मुंह बिचकाया 'यह हैड-कांस्टेबल बड़ा अक्खड़ है ।'

मोहिन्दर बोला, 'उसे बताया क्यों नहीं कि तुम पुलिस कमिश्नर के घर से बोल रहे हो ?'

राजू ने सीटी बजाई, नहीं । हम ने कसम खा रखी है कि अपने काम में डैडी के नाम का प्रयोग किसी रूप में नही करेंगे । अब तो हमें इन्सपैक्टर चन्देल के लौट आने की इन्तजारी करनी पड़ेगी । तब तक तो सन्दूक अपने पास ही रखना पड़ेगा । इस-लिए क्यों न इस मौके का फायदा ही उठाया जाए और हम नये सिरे से सन्दूक के रहस्य को तलाशने की कोशिश करें ?'

श्याम मिमियाया, 'यह सन्दूक तो फंदा बन हमारे गले में पड़ गया है । पीछा छोड़ता ही नहीं । बेताल की खोपड़ी के बोलने के ख्याल में ही मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं ।'

राजू ने सांत्वना दी । 'मेरे ख्याल में तो अब खोपड़ी बोलेगी नहीं । कुछ ऐसा है कि आमने-सामने तो वह बोलती नहीं । वह मुझ से तब बोली जब कमरे में घुप्प अन्धेरा था या फिर तब बोली जब वह सन्दूक में थी मुंह सामने बोलना शायद उसे अच्छा नहीं लगता ।'

'याद है उसने आंटी को क्या कहा था ?' मोहिन्दर ने याद दिलाया ।

'हां, वह जरा समझ में नहीं आया ।' राजू ने स्वीकार किया । 'फिर भी चलो संदूक की तलाशी तो लें लें । हो सकता है [illegible] [illegible] सन्दूक लौटाया है उसने इसमें

से कोई चीज निकाल ली हो ।

तीनों संदूक पर झुक गये और गौर से अन्दर की वस्तुओं का निरीक्षण करने लगे । देखने में अन्दर वैसे ही था जैसे उन्होंने बन्द करते समय देखा था । जग्गी वाला पत्र भी अपनी जगह मौजूद था ।

राजू ने खोपड़ी निकालकर उसे चौखटे सहित टेबल पर रखा । और पत्र को उठा लिया ।

'इसे जरा दोबारा देखें ।' राजू का सुझाव था । तीनों ने पत्र पढ़ा । पत्र पहले की तरह ही निर्दोष मासूम लगा ।

'अगर इस पत्र में कहीं भेद है तो मुझे तो नजर नहीं आता ।' राजू दबे स्वर में बुदबुदाया । 'कहीं यह सब नकली कहानी··· ठहरो ! मुझे कुछ मिल गया ! देखो !'

राजू ने पत्र व लिफाफा मोहिन्दर की ओर बढ़ाया, 'कुछ पता लगा हम कहाँ खता खा रहे थे ?',

'हम खता खा रहे थे ?' मोहिन्दर की समझ में कुछ न आया, नहीं राजू मुझे तो कोई खास बात अब भी नजर नहीं आती ।'

राजू ने उत्तेजित स्वर में कहा 'लिफाफे पर लगे टिकट । हमने टिकटों के नीचे नहीं देखा कि वहां तो कोई सन्देश नहीं लिखा । डैडी मुझे बताते हैं कि द्वितीय विश्व युद्ध में जर्मन जासूस लिफाफे के बाहर टिकट लगाने वाले स्थान पर टिकट के बराबर जगह में बारीक अक्षरों में पूरा संदेश पैंसिल से लिख देते थे और ऊपर से टिकट चिपका देते थे ।'

श्याम ने शंका प्रकट की, लेकिन वह लिखाई इन्फारेड लाइट के नीचे रखने पर नजर आ जाती है । इंगलैंड अथवा भारत में सेंसर वालों ने कहीं न कहीं इन्फारेड लाइट टैस्ट जरूर किया होगा ।'

'राजू !' मोहिन्दर चीखा और टिकटों के ऊपर अंगुलियां फिराता हुआ बोला— इनमें से एक टिकट के नीचे कुछ है । चार पैंस वाला टिकट मोटा लगता है ।'

लिफाफे पर २ एक-एक शिलिंग के और एक चार पैंस वाला टिकट लगा था ।

श्याम ने भी लिफाफा लेकर टिकटों पर अंगुलियां फेर कर देखा । सचमुच ही चार पैंस वाला टिकट जरा सा मोटा लगता था जो खाली आंखों से देखने पर नजर नहीं आता था ।

'टिकटों को जरा पानी से गीला करके देखो ! उखड़ने पर सारा भेद सामने आ जाएगा ।' मोहिन्दर ने आशा भरी उत्तेजना में कहा !

श्याम ने टिकटों पर तीन-चार बार हल्के से अपना होंठ फिराया और कुछ ही क्षणों में टिकट कोनों से उखड़ने लग गये ।

(शेष पृष्ठ १८ पर)


आदिमयुग
मम्मी मुझे तो यह डाक्टर हार्डस्टोन कुछ जंचा नहीं। मोटापा कम करने का उसने जो इलाज बताया उसका सिर टांग नहीं है।
एम० बी० बी० एच० डाक्टर है यह। इसने देवी वाले पत्थर पर मोटा बकरा बलि चढ़ाया था तभी तो एम० बी० बी० एच० डिग्री पाई है। ऐसा-वैसा नहीं होगा।
क्या तुम्हें उस डाक्टर ने यह बताया कि मोटापा कम करने के लिए रोज एक अंडे का ग्रामलेट बनाना ग्रौर हमें खिलाना व खाना ? सिर फिर गया होगा उस डाक्टर का या उसने जो इलाज बताया वह ठीक तरह सुना नहीं होगा।
नहीं डैडी, मैंने दोबारा ग्रच्छी तरह पूछा था उसने यही बताया।
मोटापा कम करने के लिए डाइटिंग की जाती है न कि ऊपर से ग्रौर ग्रामलेट बनाकर खाना।
हैल्लो डाक्टर हार्डस्टोन, मैं शिलाजीत सिंह बोल रहा हूं।···हां···वह मेरी ही बेटी थी···कंकरी-हां···ग्रपने मोटापा घटाने का इलाज बताया था न···याद है ?···हां···क्या कहा ?···ग्रच्छा ···ग्रच्छा···क्या नाम बताया प्लैंन्टोनोतोरस···ठीक है। मैं स··· कंकरी ने गलत सुन लिया होगा···अच्छा।
ग्रब यकीन ग्राया ?
यह है प्लैंन्टोनोतोरस का अंडा। इसमें पंद्रह ग्रादमियों के वजन के बराबर जर्दा ग्रौर पीला होता है। डाक्टर कहता है कि इसका ग्रामलेट बनाने के लिए कंकरी को जर्दे की जो फेंटाई करनी पड़ेगी दो ही दिन में उसकी चर्बी गल जायेगी।
इसे ठीक तरह तोड़ा जाये तो जर्दा निकालने के बाद स्वीमिंग पूल भी बनाया जा सकता है इसका।

फैण्टम — जंगल शहर



वैसे वह ठीक है,हो सकता है थोड़ी सी कठिनाई का सामना करना पड़े ।
कठिनाई ?
मुझे पहले पता था, उसके लिए हस्पताल ही ठीक है ।
रुको, घबराने की बात नहीं है ।
डॉ. एक्सिल, डियाना को बच्चा होने वाला है । मुझे डर है··· तुम जल्दी यहां पहुंचो ।
ग्रभी पहुंचा
डा० एक्सिल ग्रा रहा होगा, बांदर रक्षकों को बोलो कि उसे आने दें
ऐसा ही होगा ऐ चलते-फिरते भूत ।
डाक्टर की कोई जरूरत नहीं है हम खुद सम्भाल लेंगे ।
तुमने कठिनाई कहा था, मैं डियाना के लिए कोई खतरा मोल लेना नहीं चाहता
मेरे हाथों जन्म हुग्रा, मेरे सामने शादी हुई ग्रौर अब बच्चा ! आशा है सब ठीक होगा ।
घने जंगलों में
डॉ० एक्सिल··· डियाना···बच्चा··· जल्दी करो ।
!
बूबहा-बूबहा
गुप्त प्रवेश द्वार
गुड़ गुड़ गुड़
ग्रह ! एक्सिल ।
बच्चा होने ही वाला है ।
अंकल वाकर, बच्चा कब होगा ?
बस होने ही वाला है ।
सुनो···
लड़का या लड़की !
बच्चे का जन्म हो गया ।
हुर्रे



डियाना······
क्या तुम ठीक हो ?
हाँ प्रिय······
अरे ! लड़का हुआ है !
यप्पी ऽऽ
महांगली *
* छोटा आदमी
घने जंगल में उत्सव । बौने लोग बहुत खुश हैं ।
लड़का ! लड़का !
महांगली···महांगली ।
* छोटा आदमी
देखो डेविल, छोटा किट ।
हीरो··· क्या तुमने कभी इतना सुन्दर लड़का देखा ?
जुम्बा······ किटीना······ छोटे किट से मिलो । किसी दिन यह तुम्हारे साथ खेलेगा ।
अंकल वाकर, क्या मैं उसे गोद में ले सकता हूं ?
* FOR THE GHOST WHO WALKS.
अभी नहीं रैक्स, क्या मैं डियाना से मिल सकता हूं ?
कुछ ही देर में, अभी तबियत संभल रही है ।
खोपड़ी गुफा में ।
ओह ! जल्दी से डाक्टर को बुलाओ !
तन्दुरुस्त लड़का, डियाना ने प्राकृतिक जन्म दिया है । उसे मेरी जरूरत ही नहीं पड़ी ।
बहुत खूब, कोई कठनाई तो नहीं आई ।
डा॰ एक्सिल, क्या आप एकदम अन्दर आ सकते हैं ।
?
क्या बात है अंकल वाकर ?
कुछ पता नहीं, रेक्स ?


कोई कठिनाई आ गई क्या ?
उन्होंने मुझे अभी बताया नहीं, डा० एक्सिल उसी के साथ हैं । हे भगवान........।
तुम अब अन्दर आ सकते हो ।
© 1979 King Features Syndicate, Inc. World rights reserved
"वह इतना तेज भागा कि जमीन में आग लग गई ।" पुराने जंगल की कहावत ।
उसका क्या हाल है ? ठीक से है ना ?
आराम से, कोई जल्दी नहीं.....
मिस तगामा... कैसी......
आओ...
ऊं आ ऊं आ
??!!
ऊं आ ऊं आ
FALK & BARRY 5/5
मिस तगामा, अंकल वाकर इतनी जल्दी क्यों भागे ? क्या कुछ गड़बड़ है ?
नहीं रेक्स । यह लो वह आ गये ।
© 1979 King Features Syndicate, Inc. World rights reserved
जुड़वां ! एक लड़का और एक लड़की
!
!
!
FALK & BARRY 5/7
फैण्टम, बूबासा... योवो योवां
* बन्दर भाषा : फैण्टम, जुड़वां... लड़का...लड़की....
सब लोग नाच के लिये आपकी इन्तजार कर रहे हैं ।
इन दोनों होनहार बच्चों को पकड़ो ।
चार शताब्दी पुराना नियम, जब खोपड़ी गुफा में बच्चा होता है तो फैण्टम और बौने लोग नाचते हैं ।

क्यों और कैसे

प्र० : संसार में सबसे पहले कब और किसने धरती से तेल निकाला था ?

उ० : धरती से रिसकर निकलने वाले कच्चे तेल का पता तो प्राचीन युग के लोगों को भी था। अमरीका की "ऐलहैनी" पर्वत श्रेणी में बहुत से तेल से भरे क्षेत्र थे। कई स्थलों पर तो तेल सतह के इतना करीब था कि ये रिस कर नालों के जल में मिल जाता था।

कच्चा तेल औषधि के रूप में प्रयोग में लाया जाता था तथा इसी कारण शीघ्र ही इसकी मांग अत्यधिक बढ़ गई, परन्तु आरंभ में फिर भी बरमे की सहायता से धरती में छेद कर तेल निकालने का विचार किसी को भी नहीं आया। धरती से छेद कर तेल को बाहर निकालने के कार्य को आरम्भ करने का श्रेय अधिकतर न्यूयार्क के एक वकील श्री जार्ज बिस्सेल को ही दिया जाता है।

बिस्सेल ने धरती से प्राप्त तेल के नमूने का विश्लेषण करवाया। जिससे इस तत्व के विश्लेषण करने वाले रसायनज्ञ ने बताया कि पैट्रोलियम एक बहुत उपयोगी तेल हो सकता है तथा इससे प्राप्त अन्य तत्व भी उपयोगी साबित होंगे। इसका पता लगने पर सन् १८५७ में बिस्सेल ने एक व्यक्ति श्री ऐडविन-एल-ड्रेक को पेनिसिलवानिया के टिटसविले की सारी तेल की खाड़ी के तेल क्षेत्र की सारी जायदाद की देखभाल सौंप दी। ड्रेक ने नरम धरती में छेद कर तेल की खोज का इरादा बनाया। परन्तु उनके द्वारा धरती में बनवाया हुआ छेद बार-बार किनारों की मिट्टी गिरने से भर जाता था। इसके बाद ड्रेक के दिमाग में एक बहुत ही महत्वपूर्ण विचार आया। उन्होंने सोचा क्यूं न इस छेद में एक लोहे की पाइप को डाल दें। ताकि फिर किनारों की मिट्टी ढह ही न सके। आज भी तेल निकालने के लिए खोदे गये कुओं में मजबूत लोहे का पाइपनुमा आवरण दिया जाता है।

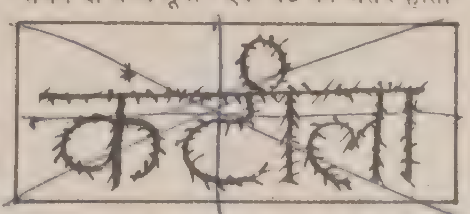
२४ अगस्त सन् १८५६ रविवार के दिन, जब कि तेल की खोज में धरती में बनाया गया छेद "६६" फीट की गहराई पर था तब अचानक ड्रेक कुएं में हो रहे, काम की जांच पड़ताल करने आये और उन्होंने इस कुंए में झांक कर देखा। उन्हें कुंए की तली में काला तरल तत्व दिखाई दिया। तुरन्त ही उन्होंने तत्व का पता लगाने के लिए डोरी में एक डिप्पर लगा कर छेद में लटका दिया। बाहर निकाल कर उस तत्व को सूंघा तो वो "तेल" था।

ड्रेक संसार भर में तेल खोजने वाले पहले व्यक्ति थे। धरती में तेल मिलने का समाचार जंगल की आग के समान, सारे संसार में फैल गया तथा जल्दी ही हर जगह तेल की खोज की होड़ आरम्भ हो गई। तेल ढूंढने का बुखार अमरीका के अन्य भागों, कैनेडा तथा यूरोप के अन्य स्थानों पर भी आरम्भ हो गया। और यहीं से एक नये युग का आरम्भ हुआ।

प्र० : संसार के समय क्षेत्र या टाइम जोन्स किस प्रकार निर्धारित किये गये थे ?

उ० : संसार में समय क्षेत्र निर्धारित होने से पहले काफी गड़बड़ होती थी, विशेषकर जब कोई यात्रा करते समय रेलों के टाइम-टेबल इत्यादि प्रयोग में लाते थे। स्टेन्डर्ड समय क्षेत्र निर्धारित कर दिये थे।

सन १८८४ में सारे संसार में समय-क्षेत्र प्रणाली लागू करने के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय कान्फरेन्स बुलाई गई थी। इस कान्फरेन्स में पृथ्वी को २४ क्षेत्रों में विभाजित किया गया। हर क्षेत्र में १५ देशान्तर रेखांश का क्षेत्र रक्खा गया। ये एक प्राकृतिक विभाजन है क्योंकि पृथ्वी एक घंटे में अपनी धुरी पर १५ अंश की गति से घूमती है। हर एक समय क्षेत्र में एक ही समय होता है तथा एक समय क्षेत्र से दूसरे समय क्षेत्र में पूरा एक घंटे का अंतर होता है। ग्रीनविच, लन्दन, इंग्लेंड को इसका आरम्भिक बिन्दु माना गया है। इस प्रकार जब ग्रीनविच में दोपहर के १२ बजते हैं, तो अगले पूर्वीय क्षेत्र में दोपहर के एक (1 PM) का समय होता है। तथा दूसरे पश्चिमी क्षेत्र पहले 11 (11 A-M) बजे का समय होता है। उदाहरण के लिए न्यूयार्क में जो कि ग्रीनविच से पाँच क्षेत्र पश्चिम को ओर है सुबह के ७ बजे [7 AM] का समय होगा।



अमरीका चार समय क्षेत्रों में विभाजित है जो कि ७५ वीं, ९० वीं, १०५ वीं तथा १२० वीं याम्योत्तर रेखाओं के आधार पर है। इन क्षेत्रों का समय पूर्वीय, मध्य का पर्वतीय तथा पेसिफिक स्टेन्डर्ड समय कहलाता है। ग्रीनविच से संसार के विपरीत भाग में एक और विभाजन रेखा है, जो 'अन्तर्राष्ट्रीय डेटलाइन' कहलाती है। ये लगभग १८० वीं याम्योत्तर रेखा के निकट है। जब ग्रीनविच में दोपहर के बारह बजते हैं तो उस समय अन्तर्राष्ट्रीय डेट लाइन पर आधी रात के बारह बजते हैं। यात्रा के दौरान इस रेखा को पार करने से एक व्यक्ति या तो एक दिन आगे या पीछे हो जाता है पाना या खोना इस पर निर्भर है कि व्यक्ति पूर्व की ओर अग्रसर है या पश्चिम की ओर जा रहा है।

प्र० : भुट्टे के अन्दर रेशम के से धागे क्यों होते हैं ? भुट्टे को इन से क्या लाभ होता है ?

उ० : भुट्टे के पौधे को दाने बनाने के लिए अपने भीतर के रेशमी बालों की आवश्यकता होती है। आइये देखते हैं ये कार्य किस प्रकार करते हैं। भुट्टे का पौधा ६-२० फीट तक ऊँचा लकड़ी के समान तने का होता है। इसके ऊपरी सिरे पर कांटों का सा एक फुंदना सा होता है। पौधे के इस भाग में नर-फूल उगता है। इससे नीचे चल कर पौधे पर एक दो या और अधिक भुट्टे की बालियां होती है, जो बाद में भुट्टे बन जाते हैं। इन भुट्टे की बालियों में धागे के समान रेशमी धागे होते हैं। ये रेशम पौधे के मादा फूल होते हैं।

हर एक रेशा बाली के बीजाण्ड कहलाने वाले जर्म पर बढ़ता है। भुट्टे की बाली पर बीजाण्ड सुन्दर कतारों मे सजे रहते हैं। हर एक मे एक दाना या बीज उत्पन्न होगा यदि रेशम के रेशे पोलन के एक कण से निषेचित हो जाये तो पोलन के कण को ग्रहण करने के लिए ही भुट्टे की बाली के पत्तों के भीतर से रेशम के धागों के सिरे बाहर निकल रहते हैं।

जब पौधे के नरफूलों का विकास होता है, तो इनके फुंदनों में पोलन के पीले रंग के रेत के समान कण उत्पन्न हो जाते हैं। गर्मी की गर्म हवा पोलन से लदे इन फुंदनों को हिला कर पोलन को उड़ा ले जाती है। पोलन के हर कण में दो शुक्राणु होते हैं। ये हवा से उड़ कर आस-पास के दूसरे पौधों पर के भुट्टे को बाली के बाहर निकले रेशम पर चिपक जाते हैं। स्टिग्मा कहलाने वाले रेशम के छोटे सिरे पोलन को ग्रहण कर लेते हैं। पोलन के ये कण शीघ्र ही धागों में से बीजाण्ड ट्यूब को भेजते हैं। फिर शुक्राणु इन ट्यूबों से होकर बीजाण्ड में पहुँच कर उन्हें निषेचित कर देते हैं। निषेचित हो जाने के बाद भुट्टे की ये नन्हीं बाली मोटी होकर गुल्ली का रूप ले लेती हैं।

क्यों और कैसे
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२


सिलबिल पिलपिल
आटोमेटिड थ्री बैंड एसी-डीसी
सिलबिल II
पिछले अंक में आपने पढ़ा कि एवन जासूस सिलबिल व पिलपिल अपना आटोमेशन करते हैं यानि जासूसी व दूसरे आधुनिक हथियारों और साज सामान से लेंस होने के कार्यक्रम पर अमल करते हैं उन्होंने अपने रोंगटे सावधान कराने वाले उपकरणों से आपका परिचय पिछली बार करवाया था···आगे।
अब आप हमारा कमाल देखेंगे। अब तक आप फिलम का ट्रेलर ही देख रहे थे। अब ऐक्शन पैकेट, सस्पेंस, रोमांस और मार-धाड़ से भरपूर ड्रामा देखेंगे। केवल वही व्यक्ति इस ड्रामे को पढ़ें जिन्हें अब तक दिल का दौरा नहीं पड़ा है।
मुझे नींद आ रही है, मैं सोना चाहता हूं। लेकिन यह ताम-झाम पीठ पर से उतरे तो सोऊं।
इतना बड़ा रॉकेट चालित जासूस भी कभी सोता है ? तुझे इसी तरह बैठे-बैठे सोने की प्रैक्टिस करनी पड़ेगी। न जाने कब कहां से कॉल आ जाय। कॉल आते ही तुझे रॉकेट चालू करके वहां पहुंचना पड़ेगा। जभी तो हिन्दुस्तान वालों को पता लगेगा कि ए-वन जासूस कम्पनी भी कोई चीज है। तार विभाग वालों की तरह हमने भी तो लाइटनिंग सर्विस शुरू की है उसका भी तो सोचना है।
अब हम वह पुराने साइकिल मार्का जासूस नहीं रहे। भेंस की जगह कमप्यूटर ने ली है। सोने की जगह अब हमको जागना होगा। हम भी तो तेरे साथ सारी रात जागते रहे हैं। तू अकेला थोड़ हो है।
हैलो कौन ? जी हां यह एवन जासूस कंपनी का घरेलू हैड क्वार्टर है। आपकी बिल्ली खो गई है ?···आपने ठीक जगह टेलीफोन किया है। आपको यह जानकर खुशी होगी कि अब हमारी कम्पनी पूरी तरह इलेक्ट्रॉनिक यंत्रों से लेंस हो चुकी है। आप यह बताइये कि आपको कौन सी सर्विस चाहिए।
पैसेंजर सर्विस में काम मजे से होगा। वह कई स्टेशनों पर रुकती हुयी जायेगी। फ्रंटियर सर्विस उससे तेज होगी। राजधानी एक्सप्रेस सर्विस टैलीग्राम के बराबर होगी··· और हमारी स्पेशल रॉकेट सर्विस है।
जिसका असर बिजली के करंट की तरह फौरन ही होता है। उधर आपने बुकिंग कराई और इधर हमारे नम्बर दो जासूस का १५० हार्स पावर का राकेट चालूSSSS।



रेडी टु टेक ग्रॉफ ! ग्राल रेडी—इंजन रेडियो वार्निंग लाइट—ग्रॉल वर्किंग, नमस्ते ।
वेदर ग्रोके । विंड विला सिटी ३७/३८ लॉगीचूड-लैटीचूड १८०-३४०, ग्रीनविच मीन टायम १५-१८-३७,…
जैसे ही यह रिकार्ड खत्म होगा दायीं बांह पर लगा इगनीशन बटन दबा देना । इसके दबाते ही रॉकेट चालू होगा ग्रौर दुनिया वाले ग्रासमान में एक ग्रौर तारा देखेंगे । वह हैरत में पड़ जायेंगे कि यह नया ध्रुव तारा कहां से ग्रा गया । बाकी तुझे यह तो याद ही होगा कि लेसर बीमा ट्रेसर से किस तरह बिल्ली का पता लगाना है ?
न चन्दा रुस का, न यह जापान का, न यह ग्रमरीकन प्यारे, यह तो है हिन्दुस्तान का ।
देखते ही देखते अपना याड़ी अपनी आसामी मिस टूना के लॉन में उतरेगा ग्रौर न्यूटॉन लेसर बीम की मदद से दो घण्टे के भीतर ही बिल्ली खोजकर दिखायेगा । वैसे मिस टूना की कोठी हमारी कोठी से केवल तीन ब्लाक ग्रागे है लेकिन रॉकेट जासूस होने के नाते हमारा फर्ज रॉकेट का प्र योगकरना है । पैदल यहां से कुल दो मिनट ५९ सैकेण्ड लगेंगे ।
WHAAAAAE
यह क्या ग्रावाज है ?
ग्रावाज तो सिलबिल की है । ऊपर से आ रही है ।
रो रहा है ! तू दूध पिलाना भूल गया उसे ।
ग्रो ग्राऊंड कंट्रोल वालो थमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया कि टूना की कोठी के पास वाले ग्राऊंड में पीपल का पेड़ है । मैं उसमें उलझ कर लटक गया हूं ।
थम दोनों ने मेरे मारने के लिए ही यह साजिश की होगी । थमारी नजर मेरे बटुए पर कब से लगी है । उसमें साढ़े सात रुपये जो रखे हैं ।
होश में ग्रा मेरे यार ! धीरज रख ।


अरे यो देखो···सिलबिल के ब्लॉस्ट प्रोटेक्टर जैकट से क्या निकल आया ? यह तो एक काली बिल्ली है । पेड़ पर चढ़ी होगी जब तेरा रॉकेट उलझ गया तो यह भी तेरे कपडों में उलझ गयी होगी ।
ठहरो···ठहरो···यह बिल्ली तो जानी-पहचानी लगती है । हाँ···यही तो है मिस टूना की बिल्ली । उसने यही हुलिया तो बताया था । काली बिल्ली, पूंछ और पैरों के अगले भाग सफेद व झालरदार मूंछें ।
यही है वह बिल्ली ? तब तो चलो ठीक ही हुआ जो मेरा एक्सीडेंट हो गया । इसका मतलब हुआ कि जासूस का एक्सीडेंट भी किसी गहरे मतलब से होता है ।
इसी को कहते हैं कि बनायी थी खीर बन गया दलिया । खैर ठीक ही हो गया, हमें डाक्टर ने दलिया खाने के लिए ही कहा था अब हमें बगैर देर किए यह बिल्ली टूना के पास पहुंचानी चाहिए ।
MEOW
JEEO
अब तो सब समझ गये होंगे कि आधुनिक समय में जेटों, रॉकेटों और कमप्यूटरों का कितना महत्व है । इनकी मदद से जटिल से जटिल केस भी गधे के रेंकने में जितना समय लगना है उतने समय में हल किए जा सकते हैं । माडर्न टैक्नोलोजी के जमाने में चौधरी चारण सिंह का कोई काम नहीं है । वह ऐसे ही है जैसे अशोका होटल में चावल के साथ घी, शक्कर मांगना ।
ओ भई मूर्खानन्द. थम अब तक मुझे पेड़ पर से लटकता देखकर हंस रिये थे । इब थारा मुंह शक्कर की तरियों पीला क्यों पड़ गया ? थम बगैर लटके भी वह काम नहीं कर सकते जो मैं पेड़ पर लटककर कर सकता हूं । इब की बार अगर पाकिस्तान से लड़ाई हुई तो पाकिस्तान के आधे जहाज तो मैं अकेले ही गिरा दूंगा, बाकी थम गिराना, मैंने सबका ठेका नहीं ले रखा है ।
यह लीजिए मिस टूना आपकी बिल्ली मिस्की । आपके हमारे पास कॉल आने के २२ मिनटों के अन्दर हमने आपकी बिल्ली खोज कर आपके सामने पेश कर दी है । यह है कमाल हमारी रॉकिट सर्विस का ।
सचमुच ही यह तो कमाल हो गया । जब आपने अपने रॉकिट सर्विस की बात की तो मैं तो समझी थी कि किन्हीं मसखरे जासूसों से पाला पड़ा है । मजाक कर रहे होंगे । आई कांट बिलीव इट । यह कर कैसे दिया आपने इतनी जल्दी ?
मिस टूना हम बोत सीरियस जासूस हैं चार्ली चैपलिन की फिल्म देखते हुये भी हम नहीं हंसते ।
A1



पिलपिल सिलबिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़ें।

आपस की बातें

चचा बातूनी की कलम दवात से

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें ।

मोहन लाल शर्मा, एम०ए० गुजराल : चाचा जी दिल टूटता कैसे है, जरा आराम से बताइये ?

उ० : हमारे शीशये दिल को सम्भाल कर
हाथ में लेना,
नजाकत इसमें ऐसी है, नजर से जब गिरा
टूटा ।

नरेश गुलाटी दीपिका–तिलक नगर मार्किट : दिन और रात एक दूसरे के सामने आते शरमाते क्यों हैं ?

उ० : शरमाते कहां हैं वे तो शाम को सबके सामने डंके की चोट एक-दूसरे से गले मिलते हैं ।

बी० कृष्ण एस० माहेश्वरी : चाचा जी, मैं आपकी श्रीमती जी को फिल्म हीरोईन के रूप में देखना चाहता हूं । क्या आपको कोई ऐतराज है ?

उ० : हमें इसमें क्या ऐतराज हो सकता है ।

प्रेम बाबू शर्मा–बगीची पीरजी : आदमी की सबसे बड़ी इच्छा क्या होती है ?

उ० : इस योग्य बनना कि दूसरों की इच्छाओं का भट्टा बिठाया जा सके ।

ईश्वर दयाल—इलाहाबाद : चाचा जी, हर मनुष्य को पिछले जन्म की बातें याद क्यों नहीं रहतीं ?

उ० : क्योंकि भगवान हर मनुष्य को पागल खाने नहीं भेजना चाहता ।

बिनय कुमार—धुलिया : ऐसा कौन सा व्यक्ति है जिसकी साल गिरह हर तीन साल बाद आती है ।

उ० : ऐसे व्यक्तियों की लिस्ट मोरार जी भाई के पास होगी क्योंकि उनकी सालगिरह भी हर चौथे साल आती है ।

मौ० अख्तर चहसग–चाँदपुर : डियर अंकल, आप यह बताइये कि जिस लड़की से मैं प्रेम करता हूं उस लड़की को पता भी नहीं, मुझ को क्या करना चाहिए ।

उ० : आप मुनादी करने वालों को उसके घर भेज दीजिए वह ढोल बजाकर उसके गेट के सामने खड़े होकर मुनादी कर देंगे ।

कुमारी अर्चना भारद्वाज—रोहतक : मैं दीवाना का नियमित पाठक हूं । आपसे अनुरोध है कि आप इसे अधिक से अधिक हास्य-प्रद और मनोरंजक बनाने की कृपा करें ।

उ० : आप की इस इच्छा की पूर्ति करना तो हमारा कर्त्तव्य है ।

लखमी चंद माधवानी–मेहर : यदि आप को यमराज ले जाये तो आप क्या करेंगे ?

उ० : उससे कोई प्रश्न पूछने को कहेंगे । और उत्तर देने के लिए आफिस जाने का बहाना करके भाग जायेंगे ।

बलवंत सिंह बिष्ट—अलमोड़ा : श्री बहुगुणा के अगले कदम के बारे में आप का क्या विचार है ?

उ० : गुण तो बहुगुणा में बहुत हैं, पर अगले कदम का शायद उन्हें खुद पता नहीं ।

अनिल कुमार अग्रवाल–मेरठ : क्या यह सच है कि अविवाहित पुरुष को जीवन में ठीक प्रकार से मुक्ति नहीं मिलती ।

उ० : जी नहीं । अगर "मुक्ति" किसी लड़की का नाम है, तो वास्तव में अविवाहित को नहीं मिलती ।

गोपाल खण्डेलव —जबलपुर : क्या संसार में प्रत्येक मनुष्य एक दूसरे से ईर्ष्या करता है ?

उ० : जी नहीं । संसार का प्रत्येक मनुष्य तो, मोरारजी देसाई, चौधरी चरणसिंह और राजनारायण नहीं है ।

अरुण कुमार जैन—आष्ठा : क्या चिल्ली आपका रिश्तेदार है ?

उ० : केवल हमारा ही नहीं, दीवाने के चार लाख पाठकों का रिश्तेदार है ।

राजीव जैन राजू–रेवाड़ी : चाचा जी, कृपया यह बताने का कष्ट करें कि हमारी चाची की उम्र कितनी है ?

उ० : आपको क्या लेना-देना है उम्र से । मतलब है, हम जो आम खा रहे हैं आप उनकी गुठलियां गिनना चाहते हैं ।

इन्द्रजीत आवारा—जालंधर : क्या चाची को आपके बारे में व आपको चाची के बारे में पूरी जानकारी रहती है ?

उ० : हमें उनके बारे में पूरी जानकारी रहती है । आजकल जरा वह 'डाईटिंग' पर हैं । आज उन के डाक्टर ने हमें बताया, 'आपकी श्रीमती जी बड़ी प्रोग्रेस कर रही हैं । कल उनका वजन १६० पौंड था । और आज १४० पौंड है ।' इस पर हम ने कहा, 'आज वह मेकअप कर के वजन कराने नहीं आई होंगी ।'

मनोजकुमार श्रेष्ठ—घराना, नेपाल : विवाहित लड़की की निशानी मांग का सिंदूर है तो विवाहित लड़के की निशानी क्या है ?

उ० : एक नहीं कई निशानियां हैं और वह सब हमारी सूरत से जाहिर हैं ।

मोहम्द परवेज—भीखनपुर : आपको आपस की बातें पढ़ कर मैं भी बातूनी होता जा रहा हू । इसका अंजाम क्या होगा ?

उ० : आपने अपने मुंह पर अलीगढ़ का ताला न लगाया तो आप पागल खाने पहुंच जायेंगे ।

प्रेमनाथ गुप्ता—नई दिल्ली : मेरे पेट में अक्सर दर्द रहता है । क्या आप डाक्टर झटका से पूछकर कोई दवा बता सकते हैं ?

उ० : डा० झटका का कहना है कि किसी अच्छे से चूर्ण की गोलियां लीजिये और रोज दस गोलियां सोने के बाद और दो गोलियां सो कर उठने से पहले खाइये ।

समी उल्लाह—सीवान, बिहार : जब खुदा इन्सान के किये की सजा उसे जिन्दगी में ही दे देता है तो उसने स्वर्ग और नरक क्यों बनाये हैं ?

उ० : खुद अपनी गलतियों का हिसाब लगाने के लिये, क्योंकि यह भी तो कहा जाता है कि दुनिया में जो कुछ होता है ऊपर वाले की मर्जी से होता है । इसके लिए एक शेर अर्ज है—

पत्ता भी अगर हिलता है तो उसकी रजा से,
फिर बन्दा गुनाहगार है मालूम नहीं क्यों ?

नटवर पाटिल—कोण्डा गांव : कोई आपको गाली दे तो क्या आप उसका बुरा मानते हैं ?

उ० : पहले बुरा मनाते थे पर अब नहीं मनाते । हमारे पड़ौस में एक लाला जी रहते हैं । उनका एक आदमी से झगड़ा हो गया और उस आदमी ने लालाजी को खूब जी भर कर गालियां दीं । हमने लालाजी से कहा, 'पुलिस में हमारी जान पहचान है । थानेदार हमारे मित्र हैं । कहो तो थानेदार बुलवाकर इसकी तसल्ली करवा दें ? इस पर लालाजी बोले, 'रहने दीजिये चाचा जी, थानेदार आयेगा तो उसे चाय पानी या लस्सी का गिलास पिलाना पड़ेगा । बैठे बिठाये दो चार की ठुक जायेगी और फिर गालियां देने में क्या है ? यह आदमी कुछ दे ही रहा है, ले तो नहीं रहा ।

उमेश ज्ञानचंदानी—नागपुर : राजनारायण को जब गुस्सा आता होगा तो वह अपनी दाढ़ी के बाल नोचते होंगे, जब आपको गुस्सा आता है तो आप क्या करते हैं ?

उ० : हम भी राजनारायण की दाढ़ी के बाल नोचते हैं ।

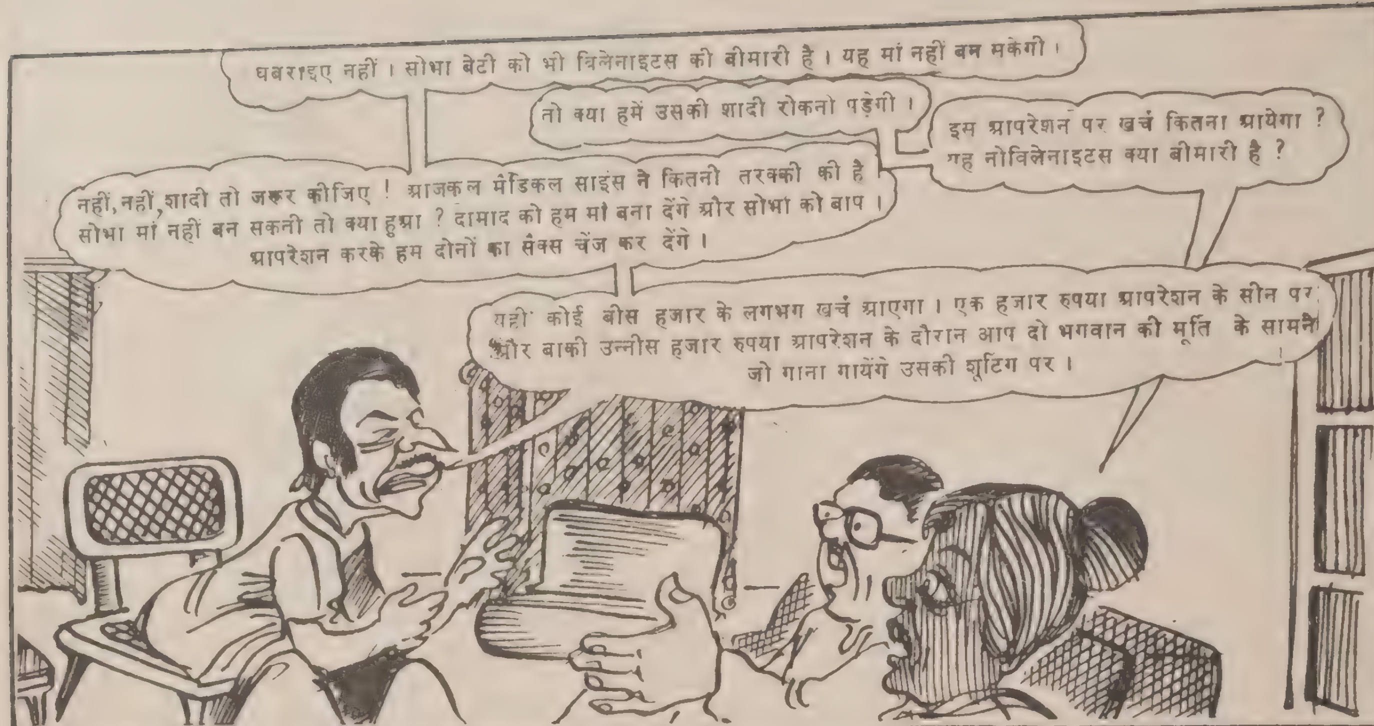
रमिन्द्र सिंह—लुधियाना : यदि जीवन और मृत्यु भगवान के हाथ हैं तो लोग बीमार व्यक्ति को डाक्टर के घर क्यों ले जाते हैं ?

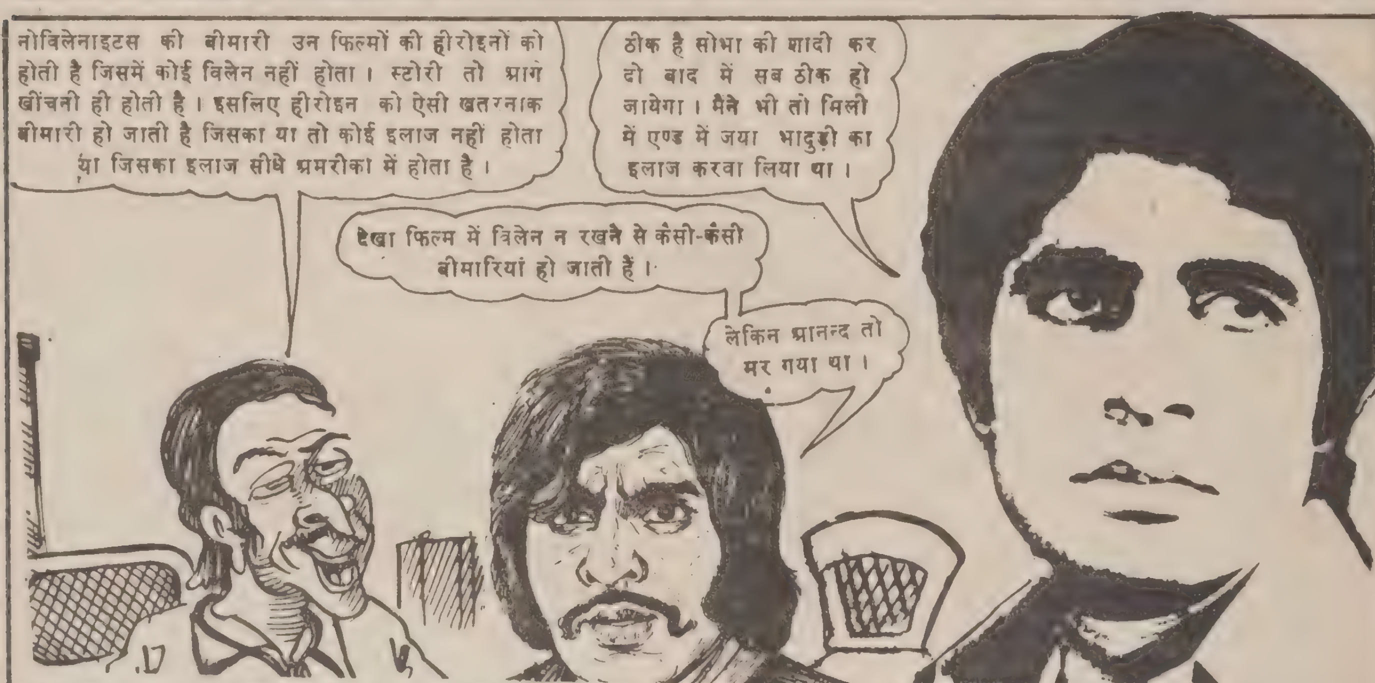
उ० : क्योंकि उस समय डाक्टर ही बीमार व्यक्ति का भगवान होता है ।

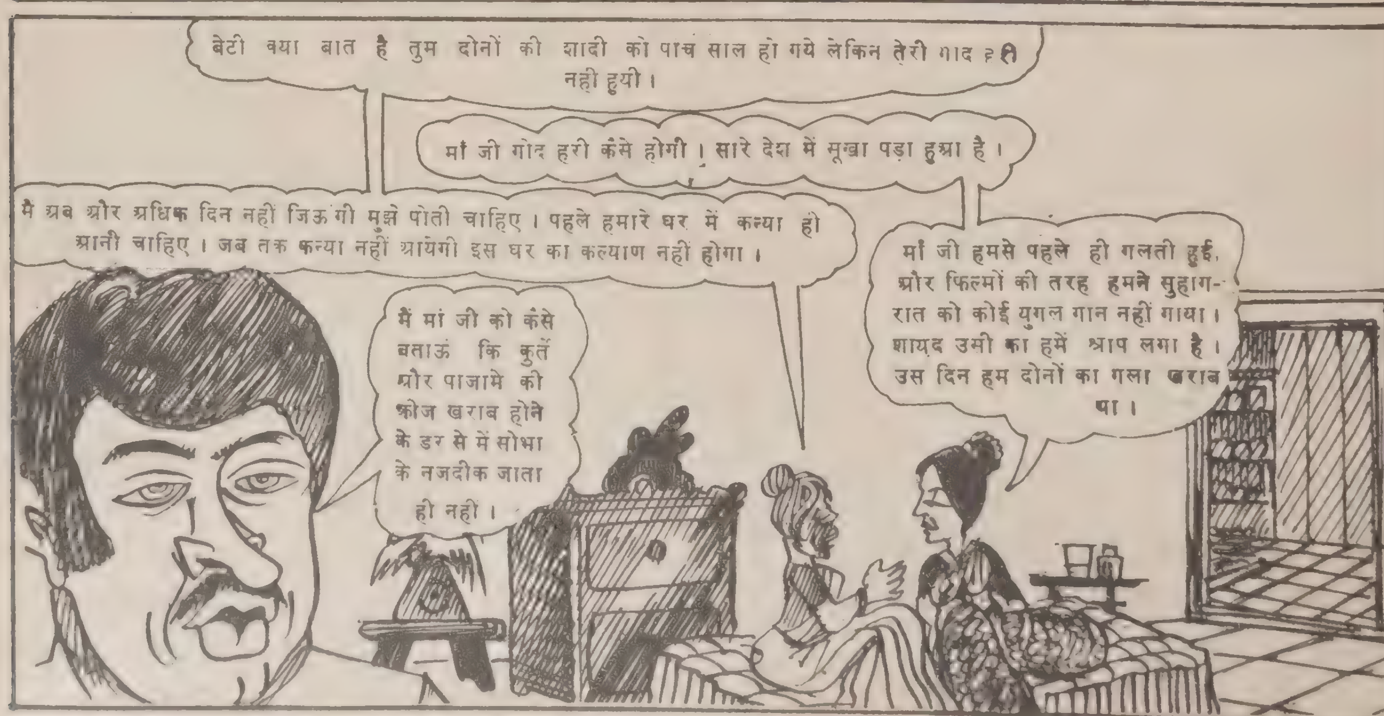
आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२



फिल्म पैरोडी
आंगन की कली
संगीत : ओनिक सोमी
कलाकार : राकेश रोगन, लक्ष्माई और बेबी गीठा
मां तुम जल्दी अच्छी हो जाओ। दवा खाओ ?
बेटा अगर तू मुझे अच्छी करना चाहता है तो जल्दी से बहू ले आ, मेरी देख-भाल करने वाला तो होगा कोई।
मां मैं जितना कमाता हूं उससे हम दो का मुश्किल से गुजारा चलता है। तीसरे को क्या खिलायेंगे ?
तू खाने की फिकर न कर। हम कुत्ते को जो खाना फेंकते हैं वह उसे दे देंगे। कुत्ता किसी और घर खा लेगा।
मैं एक डाक्टर के तौर पर तुम्हें बता रहा हूं कि मां जी का भला चाहते हो तो तुम मेरी भांजी सोभा से जल्दी शादी कर लो। मां जी को नर्स की जरूरत है। मेरी भांजी से शादी न की तो···
तो क्या होगा डाक्टर ? क्या मां जी को कुछ हो जायेगा ?
नहीं ! मैं सबको बता दूंगा तुम आदमी नहीं हो बल्कि एक टट्टू हो।
आपको कैसे पता लगा मैं टट्टू हूं।
तुम्हारे कपड़े देख। तुम बाहर काम से घर आते हो या सोकर उठते हो तुम्हारे कुर्ते और पाजामे पर एक भी शिकन नहीं होती। हमेशा ऐसा लगता है जैसे किसी डिटर्जेन्ट के विज्ञापन के लिए तैयार होकर निकले हो। तभी मुझे शक पड़ा। आदमी को तो बैठना पड़ता है, कितनी ही सावधानी बरते कपड़ों पर सलवट पड़ ही जाती है। केवल टट्टू ही ऐसा जानवर है जिसे बैठना नहीं पड़ता वह सोता भी खड़े-खड़े ही है।
मैं शादी के लिए तैयार हूं।
ऊंह ! पता नहीं अपनी बेटी के लिए हमने कैसा दामाद चुना ! मुझे दौड़ा-दौड़ाकर थका दिया। यह तो मुझे पता था कि बेटी के रिश्ता ढूंढ़ने के लिए काफी दौड़-धूप करनी पड़ती है। लेकिन इस तरह की दौड़ लगानी पड़ेगी सोचा न था। दामाद जिस तरह चौकड़ी भरता है उसे देख लगता है यह टट्टू तो नहीं है ?
सोभा ! सोभा। यह क्या हो गया तुम्हें ? मां जी जल्दी आइए सोभा को शायद दौरा पड़ा है।
यह इकॉनॉमिक्स की स्टूडेंट है। कहीं तुमने इसे यह तो नहीं बता दिया कि तुम्हारे बैंक एकाउंट में केवल पांच रुपये तीस पैसे बैलेंस हैं ?

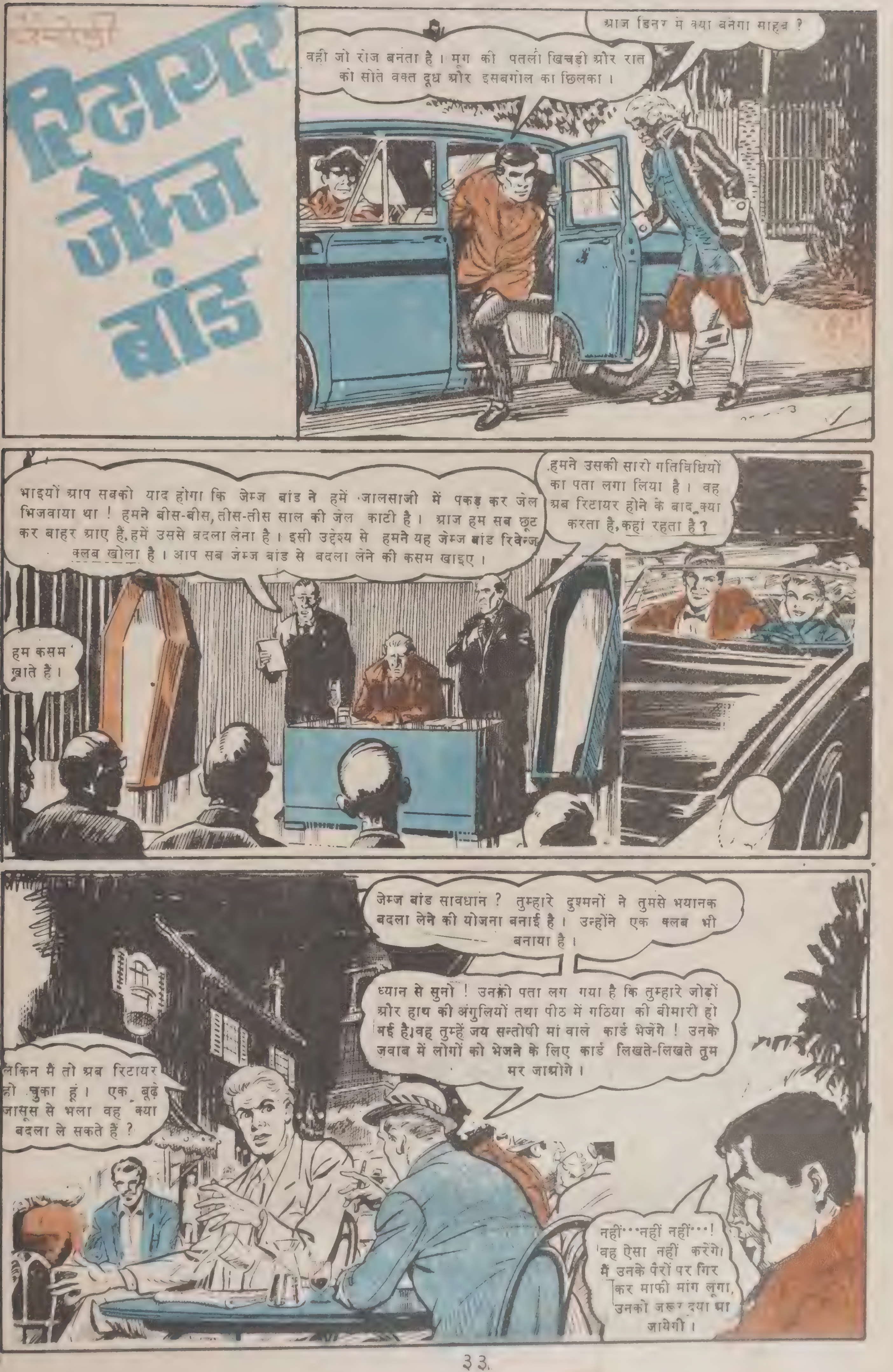

घबराइए नहीं । सोभा बेटी को भी विलेनाइटस की बीमारी है । यह मां नहीं बन सकेगी ।
तो क्या हमें उसकी शादी रोकनी पड़ेगी ।
इस आपरेशन पर खर्च कितना आयेगा ? यह नोविलेनाइटस क्या बीमारी है ?
नहीं, नहीं, शादी तो जरूर कीजिए ! आजकल मेडिकल साइंस ने कितनी तरक्की की है सोभा मां नहीं बन सकती तो क्या हुआ ? दामाद को हम मां बना देंगे और सोभा को बाप । आपरेशन करके हम दोनों का सेक्स चेंज कर देंगे ।
यही कोई बीस हजार के लगभग खर्च आएगा । एक हजार रुपया आपरेशन के सीन पर और बाकी उन्नीस हजार रुपया आपरेशन के दौरान आप दो भगवान की मूर्ति के सामने जो गाना गायेंगे उसकी शूटिंग पर ।


नोविलेनाइटस की बीमारी उन फिल्मों की हीरोइनों को होती है जिसमें कोई विलेन नहीं होता । स्टोरी तो आगे खींचनी ही होती है । इसलिए हीरोइन को ऐसी खतरनाक बीमारी हो जाती है जिसका या तो कोई इलाज नहीं होता या जिसका इलाज सीधे अमरीका में होता है ।
ठीक है सोभा की शादी कर दो बाद में सब ठीक हो जायेगा । मैंने भी तो मिली में एण्ड में जया भादुड़ी का इलाज करवा लिया था ।
देखा फिलम में विलेन न रखने से कैसी-कैसी बीमारियां हो जाती हैं ।
लेकिन आनन्द तो मर गया था ।


बेटी क्या बात है तुम दोनों की शादी को पांच साल हो गये लेकिन तेरी गोद हरी नहीं हुयी ।
मां जी गोद हरी कैसे होगी । सारे देश में सूखा पड़ा हुआ है ।
मैं अब और अधिक दिन नहीं जिऊंगी मुझे पोती चाहिए । पहले हमारे घर में कन्या ही आनी चाहिए । जब तक कन्या नहीं आयेगी इस घर का कल्याण नहीं होगा ।
मां जी हमसे पहले ही गलती हुई, और फिलमों की तरह हमने सुहाग-रात को कोई युगल गान नहीं गाया । शायद उसी का हमें श्राप लगा है । उस दिन हम दोनों का गला खराब था ।
मैं मां जी को कैसे बताऊं कि कुर्ते और पाजामे की क्रीज खराब होने के डर से में सोभा के नजदीक जाता ही नहीं ।


सोभा बेटी क्या यह सच है ? तुम मां बनने वाली हो ?
मैं सच कह रही हूं मां जी ! झूठ बोलकर मुझे कौन सा इलेक्शन जीतना है ।
यह कैसे हो गया ? अब मेरे कुर्ते और पाजामे की खैर नहीं है । गीले हो जायेंगे और क्रीज खराब हो जायेगी ।
हे भगवान तेरा लाख-लाख शुक्र है ।
इन बेचारियों को यह नही पता कि वास्तव में मैं टट्टू हूं । अतः न लड़की पैदा होगी और न लड़का । पैदा होगा तो खच्चर पैदा होगा ।
मां जी मेरा दिल कहता है कि आपकी मनोकामना पूरी होगी । लड़की ही होगी ।
आप लोगों को सख्त गलत फहमी हुई है । सोभा गर्भवती हो ही नही सकती । मां जी के देहान्त का मुझे अफसोस है । लेकिन सोभा का गिर कर गर्भपात होने का सवाल ही नहीं उठता ! वह कभी मां नहीं बन सकती । उसे नोविलेनाइटस की बीमारी है ।
आपने यह बात मुझे पहले क्यों नहीं बताई ?
मै तुम्हें कैसे बताता ? मुझे पता था कि तुम एक टट्टू हो, ऐसी बात सुनकर बिदक न जाते ?
अब तुम ऐसा करो, बम्बई जाओ वहां आपरेशन हो सकता है । आपरेशन महंगा और खतरनाक तो होगा । लेकिन बम्बई रेसिंग सेंटर है,वहां घोड़ों की बड़ी-बड़ी रेसें होती हैं । तुम भी उन रेसों में दौड़ना । एक-आध रेस जीत गये तो आपरेशन का खर्चा निकल आयेगा ।
सोभा यह देखो मुझे बम्बई में एक अच्छी नौकरी मिल गयी है । रहने की जगह मिलेगी अस्तबल । और पैसे भी ज्यादा मिलेंगे । वहां सीले जलवायु के कारण मेरे कुर्ते और पाजामे में भी सलवट कतई नहीं पड़ेगी । तुम्हें भी चौपाटी में भेल पूरी खाने को मिलेगी ।
आंटी, बचाओ ! बचाओ !! बचाओ !!! मुझे पकड़ो न आंटी । मै गिर जाऊंगी ।
आम चुरा रही थी ।


आंटी हम स्कूल से आ रहे थे, हमें बहुत भूख लगी थी इसीलिए आप···।
आंटी हम लोग अनाथाश्रम में रहते हैं। हमारे कोई मम्मी पापा नहीं हैं। वहां हमारा दिल नहीं लगता।
देखने में तो तू बहुत मोटी है और लिबास तुम्हारा पब्लिक स्कूल के बच्चों वाला है इससे पता लगा कि आजकल अनाथाश्रमों में रहन-सहन तथा शिक्षा का स्टैंडर्ड बहुत बढ़ गया है। मेरे बच्चे होंगे तो मैं उन्हें भी अनाथाश्रमों में भेजूंगी।
आंटी आप हमारी मम्मी बन जाओ।, मेरा नाम भावना है। रख लो न मम्मी मुझे।
अच्छा मैं तुम्हें यहीं रहने दूंगी। पापा से कह कर हम तुम्हें गोद ले लेंगे। अब तुम्हें वहां नहीं रहना पड़ेगा।
ठीक है आंटी, यह वहां नहीं रहेगी तो तीन बच्चों की जगह खाली होगी।
मैंने तुम्हें कितनी बार कहा है कि मम्मी के ज्यादा पीछे न पड़ो, इसे दौड़ाया न करो और गाने वगैरह न गवाया करो। मम्मी बीमार हैं। ऐसा करने पर उनकी बीमारी बढ़ जाती है।
पापा क्या मम्मी को थकावट होने पर दिल का दौरा पड़ता है?
नहीं, जब यह तुम्हारे साथ गाना गाती फिरती है तो इसे पता लग जाता है कि एक्टिंग का पुरस्कार इसे नहीं तुम्हें मिलेगा। बेचारी को जूली के बाद कोई पुरस्कार नहीं मिला। इसी ख्याल से इसे दौरे पड़ते हैं।
पाप्पा तुम समझते क्यों नहीं? मैं तो जान-बूझ कर मम्मी को थकाती हूं ताकि इन्हें दौरा पड़े। इसी में हम दोनों की भलाई है। दौरे पड़ने पर मम्मी का आपरेशन होगा और वह बचेंगी नहीं···
पापा, जरा अक्ल से काम लो। इतने वर्षों बाद आपको हीरो का रोल मिला। फिल्म की इतनी रीलें निकल गयीं लेकिन कहीं अपनी एक्टिंग के जौहर दिखाने का अवसर मिला? वही घिसे-पिटे सीन दोहराये जा रहे हैं मम्मी नहीं रहेगी तो फिल्म की स्टोरी आगे बढ़ाने के लिए मेरी जवानी की कहानी जोड़नी पड़ेगी। कुछ ही वर्षों में मुझे हीरोइन का रोल मिलेगा। और आप अधेड़ डैडी का रोल करेंगे जैसे संजीव कुमार करता है। बूढ़ों का रोल करते-करते संजीव कहां से कहां पहुंच गया। वही चांस आपको भी मिलेगा।
ऊऽऽ।
डाक्टर साहब, मुझे कोई आपत्ति नहीं है आप सोभा का फौरन आपरेशन कर दीजिए। मैं सारी जिम्मेदारी अपने सिर लूंगा।
शाबाश पापा। अब दर्शक लोग आंगन की फली के बाद की कड़ी लॉन की चम्पा देखने के लिए तैयार हों। राम नाम सत्त है।
ओके।



रिटायर जेम्स बांड
आज डिनर मे क्या बनेगा साहब ?
वही जो रोज बनता है। मूग की पतली खिचड़ी और रात को सोते वक्त दूध और इसबगोल का छिलका।
भाइयों आप सबको याद होगा कि जेम्ज बांड ने हमें जालसाजी में पकड़ कर जेल भिजवाया था ! हमने बीस-बीस, तीस-तीस साल की जेल काटी है। आज हम सब छूट कर बाहर आए है. हमें उससे बदला लेना है। इसी उद्देश्य से हमने यह जेम्ज बांड रिवेन्ज क्लब खोला है। आप सब जेम्ज बांड से बदला लेने की कसम खाइए।
हम कसम खाते हैं।
हमने उसकी सारी गतिविधियों का पता लगा लिया है। वह अब रिटायर होने के बाद क्या करता है, कहां रहता है ?
जेम्ज बांड सावधान ? तुम्हारे दुश्मनों ने तुमसे भयानक बदला लेने की योजना बनाई है। उन्होंने एक क्लब भी बनाया है।
लेकिन मैं तो अब रिटायर हो चुका हूं। एक बूढ़े जासूस से भला वह क्या बदला ले सकते हैं ?
ध्यान से सुनो ! उनको पता लग गया है कि तुम्हारे जोड़ों और हाथ की अंगुलियों तथा पीठ में गठिया की बीमारी हो गई है। वह तुम्हें जय सन्तोषी मां वाले कार्ड भेजेंगे ! उनके जवाब में लोगों को भेजने के लिए कार्ड लिखते-लिखते तुम मर जाओगे।
नहीं…नहीं नहीं…! वह ऐसा नहीं करेंगे। मैं उनके पैरों पर गिर कर माफी मांग लूंगा, उनको जरूर दया आ जायेगी।

शत्रुता का रहस्य

हरिकृष्ण देवसरे

यह कहानी उस समय की है जब सभी जानवरों में मित्रता थी। सब एक-दूसरे की बात मानते थे, एक-दूसरे पर उन्हें विश्वास था और वे सभी आपस में मित्र थे।

एक बार की बात है, एक शहर के कुत्तों को दूसरे शहर में रहने वाले कुत्तों का निमंत्रण आया। रिश्तेदारी का मामला था। कुत्तों को जाना ही पड़ा। लेकिन जाने से पहले एक विकट समस्या आ गयी। कुत्तों के पास कुछ महत्वपूर्ण दस्तावेज थे। उन्हें भय था कि उनके जाने के बाद कोई उन कागजों को चुरा न ले जाय या कोई नष्ट न कर दे। इसलिए वे चाहते थे कि उन कागजों को किसी सुरक्षित स्थान पर पहुंचा दिया जाय। वह स्थान कौन-सा हो, यही समस्या थी।

सभी कुत्ते विचार करने बैठे। किसी ने कहा, 'हम पुराने मन्दिर में उन कागजों को छिपा आयें।'

'लेकिन अगर किसी ने देख लिया या उसे उस रहस्य का पता चल गया तो समझो कि मुसीबत आयी।' दूसरे ने कहा।

'तो ऐसा करो कि शहर के साहूकार को दे दो।' तीसरे ने सुझाव दिया।

'न...न...न...ऐसा मत करना। वह बड़ा लालची और धोखेबाज है। उसने न जाने कितने लोगों की जायदाद इसी तरह हड़प ली है।' चौथा कुत्ता चट से बोल उठा।

'मैं तो सोचता हूं कि हम थाने में जमा करा दें।' पांचवे ने बड़ी गम्भीरता से कहा।

'तुम तो मूर्खों की-सी बातें करते हो। भला पुलिस का क्या यह काम है!' पहले कुत्ते ने उसे डांटा। इस पर पांचवा कुत्ता मुह बनाकर बैठ गया।

'मैं बताऊं एक उपाय?' छटे कुत्ते ने सुझाव दिया, 'हम क्यों न इन कागजों को अपने साथ ले चलें?'

'और अगर रास्ते में पानी बरसा या डाकुओं ने लूट लिया तब क्या होगा?' तीसरे कुत्ते ने कहा।

'फिर आखिर करना क्या है?' दूसरे कुत्ते ने झल्लाकर कहा।

सब कुत्ते मौन हो गए। कोई उपाय नहीं सूझ रहा था। वे मुंह लटकाकर सोचने लगे कि क्या किया जाय। बात सचमुच ही गम्भीर थी। दस्तावेजों को यूं ही नहीं छोड़ा जा सकता था। निमन्त्रण पर जाना भी आवश्यक था। फिर दोनों काम कैसे जमें? इसी उधेड़बुन में सभी थे।

उस सभा में एक बूढ़ा कुत्ता भी बैठा था। अब तक वह मौन था। अब उसने अपना मुँह खोला। सभी कुत्तों ने उसकी तरफ आशा-भरी नजरों से देखा कि शायद यह कोई उपाय बताए। बूढ़े कुत्ते ने कहा, 'हमें किसी-न-किसी पर तो विश्वास करना ही पड़ेगा। दुनिया विश्वास के ही सहारे जीती है। अगर धोखा हुआ तो देखेंगे। एकदम निराश नहीं होना चाहिए।'

'आखिर आप कहना क्या चाहते हैं? हम किस पर विश्वास करें?' एक आवाज आयी।

'बिल्लियों पर!' बूढ़े कुत्ते ने कहा।

'बि...ल्लि...यों...पर।' आश्चर्य-भरी आवाज आयी।

'उन जूठ-जुठैलों पर!' दूसरी आवाज आयी।

'जो चुरा-चुराकर अपना पेट भरती हैं, उन पर हमें विश्वास नहीं करना चाहिए।' तीसरी आवाज आयी।

'यह नहीं हो सकता।' एक साथ कई



आवाजें आयीं।

'लेकिन जरा सोचो तो सही। आखिर इसमें बुराई क्या है? क्या हम जूठन नहीं खाते? क्या मौका लगने पर हम हाथ साफ करने से पीछे हट जाते हैं? फिर भला बिल्लियों को हम बुरा क्यों कहते हैं? इसलिए मेरी बात मानो और दस्तावेजों को बिल्लियों के पास जमा करा दो। हमारा उनसे पुराना सम्बन्ध रहा है। हमने अनेक बार उनकी मदद की है। इस समय वे भी हमारी मदद करेंगी।'

काफी बहस के बाद अन्त में मतगणना हुई। अधिकांश कुत्तों ने बूढ़े कुत्ते की बात समझ ली थी इसलिए उसके ही पक्ष में सबसे ज्यादा मत पड़े। कुत्तों ने बिल्लियों से जाकर अपनी बात बताई तो उन्होंने दस्तावेजों को सुरक्षित रखने का वचन दिया। कुत्तों ने उन्हें दस्तावेज सौंप दिए और अपने रिश्तेदारों से मिलने चले गए।

बिल्लियों ने दस्तावेज रख तो लिए लेकिन उनकी सुरक्षा का प्रश्न उनके सामने भी था। अगर कहीं ये कागज चोरी चले गए तो कितनी बदनामी होगी। इसी चिंता में उन्होंने एक सभा बुलाई।

'इन्हें हम घर के छप्पर में छिपा दें। वहां कोई नहीं देख सकेगा।' एक बिल्ली ने सुझाव दिया।

'लेकिन अब तो वर्षा का मौसम आने वाला है। अगर ये पानी में भीग गए तो कुत्ते हमें कहीं का नहीं छोड़ेंगे।' दूसरी बिल्ली ने कहा।

'तो इन्हें जमीन में गाड़ दें।' तीसरी बिल्ली ने कहा।

'वहां भी खतरा है। जमीन गीली हो तो ये कागज सड़ जाएंगे।' चौथी बिल्ली ने कहा।

'सबसे अच्छा तो यही है कि हम इन्हें अपने घर में एक बक्से में बन्द करके रख दें और उस पर बारी-बारी से पहरा दिया करें।'

'हां, यही ठीक रहेगा।' सब बिल्लियों ने एक स्वर से कहा। और अगले दिन से दस्तावेजों पर बिल्लियों का कड़ा पहरा हो गया। दिन-पर-दिन बीतने लगे। कुत्तों का कोई समाचार नहीं मिला कि वे कब तक

लौट रहे हैं। आखिर सर्दियां आ गयीं। कुत्ते नहीं लौटे। बिल्लियों को चिन्ता हुई कि अब क्या करें। सर्दी में रात भर जाग कर पहरा देना उनके लिए कठिन था। इसलिए फिर एक सभा बुलाई गयी।

'हम इन दस्तावेजों को किसी गुप्त स्थान में क्यों न रख आएं ?" एक बिल्ली ने कहा।

'यह दूसरे का माल है। अगर मान लो किसी ने चुरा लिया तो हम कहां से लायेंगे। रुपया-पैसा या और कोई चीज हो तो हम यह खतरा मोल ले सकते थे।' दूसरी बिल्ली ने कहा।

'तो फिर अगर कोयल के पास किसी पेड़ के खोखले में रख आयें ?' तीसरी बिल्ली ने कहा।

'वहां अब काना कौवा आता है। मगर उसे पता लग गया तो वह इन्हें चुराए बिना नहीं मानेगा।'

'मेरी समझ से तो हम चूहों की मदद लें।' एक बूढ़ी बिल्ली ने कहा, 'वे लोग जमीन में काफी गहराई में रहते हैं। वहां चोर क्या चोर का बाप भी नहीं पहुंच सकता। चूहे रात में सोते भी नहीं। इसलिए वे बड़ी अच्छी तरह इनकी निगरानी कर सकेंगे।'

इस उपाय को सभी ने मान लिया। बिल्लियां उन दस्तावेजों को लेकर चूहों के पास गयीं। चूहों ने उन्हें अपने पास रखना स्वीकार कर लिया।

चूहों ने उन दस्तावेजों को अपने बिल के कोने में रख दिया और निश्चिन्त हो गए। वे जानते थे कि यहां कोई खतरा नहीं हो सकता।

कुछ दिनों बाद सर्दी बढ़ी। ठण्ड से बुरा हाल होने लगा। जमीन के अन्दर गहराई में बने उस बिल में भी चूहे सर्दी से कांपने लगे। उन्हें कोई उपाय नहीं सूझ रहा था कि क्या करें। तभी एक धूर्त बूढ़े चूहे की नजर उन दस्तावेजों पर पड़ी। उसने कहा, 'हम क्यों न इन कागजों में अपना घर बना लें। इनमें दुबक कर बैठेंगे तो सर्दी बिल्कुल नहीं लगेगी।'

डूबते को तिनके का सहारा होता है। वे चूहे उन कागजों में दुबक गए। लेकिन आदत से मजबूर। वहां बैठे-बैठे क्या करें ? इसलिए वे उन कागजों को कुतरते भी रहे। जब कई दिन हो गए और सर्दी कम न हुई तो उन्हें भूख सताने लगी। मरता क्या न करता, उन्होंने उन कागजों को ही खाना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे सारे कागज साफ हो गए।

सर्दियां बीतीं तो कुत्ते लौटे। वे सीधे बिल्लियों के पास अपने दस्तावेज वापस मांगने गए। बिल्लियां उन्हें लेकर चूहों के पास पहुंचीं। लेकिन वहां उन्होंने जब कागजों की चिंदियां देखीं तो क्रोध से आग-बबूला हो उठीं। उन्होंने चूहों पर हमला बोल दिया। कुत्तों को बिल्लियों की गैर-जिम्मेदारी पर बेहद क्रोध आया, साथ ही चूहों पर भी। वे बिल्लियों और चूहों पर टूट पड़े। बड़ी मुश्किल से यह युद्ध समाप्त हुआ। लेकिन दुश्मनी आज तक चली आ रही है। और वे आपस में एक-दूसरे के शत्रु बने हुए हैं। ●

हा हा हा

● एक बार एक छोटे से कस्बे में एकमात्र फैक्ट्री में आग लग गई। कई लोग बेकार हो गये। कस्बे में काम मिलना बहुत कठिन था। उसी कस्बे में एक घटिया सा सर्कस आया। एक व्यक्ति जो बेकारी से बहुत तंग था सर्कस मैनेजर के पास गया और काम मांगा। मैनेजर बोला, 'भई हमारे पास और काम तो है नहीं। हां हमारे पास जानवरों की बहुत कमी है। अगर तुम टाईगर की खाल पहन कर टाइगर की तरह ही रस्सी पर चलो तो वह काम मिलेगा। लोगों को पता नहीं लगना चाहिए कि टाइगर नकली है।'

वह आदमी मान गया। टाइगर की खाल पहन टाइगर की तरह चलने का अभ्यास भी किया। शो में वह टाइगर बन कर रस्सी पर चल ही रहा था कि नीचे गिर पड़ा। नीचे जानवरों का पिंजरा था जिसमें एक सिंह घूम रहा था। टाइगर को देखते ही वह जोर से गरजा। डर कर टाइगर के मुंह से इंसानी चीख निकल गई जो सिंह के गर्जन के कारण दर्शकों को सुनाई नहीं पड़ी। नकली टाइगर 'बचाओ-2 चिल्लाने के लिए मुंह खोल ही रहा था कि सिंह गरजा और कूद कर टाइगर को दबोच लिया और उसके कान में बोला— 'बेवकूफ चुप रह! इस कस्बे में एक तू ही बेकारी का शिकार थोड़े ही है।'

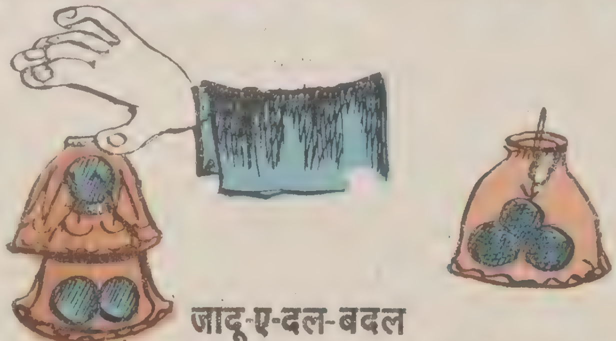
● एक पुलिस वाला और एक हट्टा-कट्टा आदमी रेल के डिब्बे में आमने-सामने बैठे थे। समय काटने की गरज से पुलिस वाला बोला, 'यार तुम तो हट्टे कट्टे तगड़े हो। पुलिस में क्यों नहीं भरती हुए ?'

वह आदमी उत्तर में बोला, 'भरती होने गया तो था। लेकिन उन्होंने मुझे भर्ती करने से इंकार कर दिया जब उन्हें मैंने अपने बाप का नाम बता दिया।'

● गंजे बाप को अपने बेटे के फिल्मों के लिए पागलपन से चिढ़ थी। एक दिन वह बोला, 'मैं तुम्हें कभी अमिताभ जैसा हेयर स्टायल नहीं रखने दूंगा।'

बेटा बोला, 'क्यों नहीं ? आप खुद भी तो डेविड का हेयर स्टायल रखते हैं।'

मॉडर्न ब्लैक मैजिक



जादू-ए-दल-बदल

जादूगर तीन गोले व दो कटोरे दिखाता है। दो गोले एक कटोरे के नीचे ढक देता है। तीसरे को उल्टे कटोरे के पेंदे पर रखकर उसके ऊपर दूसरा कप उल्टा रखकर मंत्र पढ़कर दबाता है। कप उठाने पर तीनों गोले नीचे वाले कप के अन्दर मिलते हैं।

भेद—नीचे वाले कटोरे का पेंदा नीचे की ओर झूलने वाला होता है। दबाने पर नीचे गिरता है। सामान्य रूप में स्प्रिंग के कारण आम पेंदे की तरह ही लगा रहता है।



आसाम का जादू

जादूगर जेल सिंह एक बक्सा दिखाते हैं। उसमें बंगला देश से आकर आसाम में बसी एक लड़की को लिटा कर बक्सा बन्द कर दिया जाता है। फिर जादूगर आसाम के कुछ लड़कों को बक्से में तलवार घुसेड़ने का आदेश देते हैं। लड़के तीनों ओर से बक्से के आर-पार तलवार घुसेड़ते हैं। इस बीच जादूगर भंगड़े की धुन पर नाचते रहते हैं। तलवारें घुसेड़े जाने के बाद जादूगर तलवारें निकालता है। बक्सा खोलता है लड़की जीती जागती साबुत मुस्कराती हुई उठ खड़ी होती है।

भेद—सारी कारीगरी बक्से में छिपी है। नीचे वाला चित्र देखें। दायीं व बायीं दीवारों पर नीचे गिरने वाले पल्ले भीतर से लगे हैं। लड़की अन्दर चौकड़ी मार कर लेट जाती है इस प्रकार केवल छः इंच की ऊंचाई में उसका सारा शरीर आ जाता है। ऊपर से पल्ले गिर जाते हैं। तलवारों के आने जाने की राह खाली हो जाती है।



खाली हैट से मरा हुआ चूहा निकालना

जादूगर देवराज अर्स दर्शकों को खाली हैट दिखाते हैं और फिर हैट में हाथ डाल कर मरा हुआ चूहा निकाल कर दिखाते हैं।

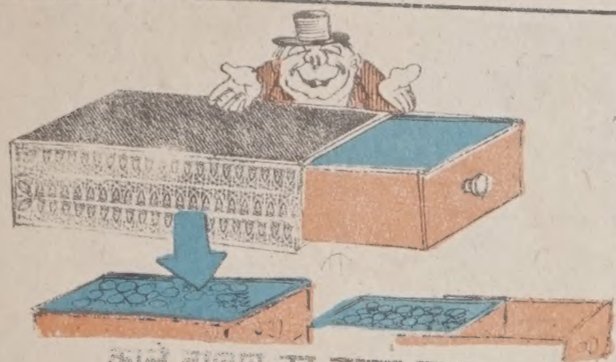
भेद—मरा चूहा जादूगर के कोट की दायीं बांह के अन्दर रखा होता है। जादूगर हैट में हाथ डालता है तो बांह नीचे हो जाने के कारण चूहा हैट में गिर जाता है।



फनल में कोका कोला डाल गायब करना

जादूगर फर्नान्डीस एक कागज का शीट दिखाता है। उसे मोड़कर कोन यानी फनल सा बना देता है। मेज पर रखे कोका कोला की बोतल में से कोक गिलास में उंडेलता है और फनल मे डालता है। कुछ देर मंत्र पढ़ने के बाद फनल खोल देता है कागज सूखा मिलता है कोका कोला नदारद।

भेद—कागज का टुकड़ा दुहरी तह वाला होता है। तहों के बीच में ब्लाटिंग पेपर रखा है। कोक की बोतल का घोल भी वास्तव में कोक नहीं होता, यह थिनर होता है या अमोनिया तरल जिसमें टर्की अम्बर वाला ब्राउन रंग दिया जाता है। अमोनिया तरल उड़ने वाली चीज है। जितनी देर में जादूगर मंत्र पढ़ता है वह उड़ जाता है ब्लाटिंग में फैलने के कारण और जल्दी उड़ जाता है।



काले बाजार का काला जादू

जादू एक बक्स लेकर उसका ड्राअर खींच कर दिखाता है ड्राअर खाली है। ड्राअर बंद कर वह नम्बर दो का मंत्र पढ़ता है। फिर ड्राअर खोलता है इस बार ड्राअर में वह चीज भरी मिलती है जो बाजार से गायब होती है यानी केवल ब्लैक में मिल रही हो।

भेद—भेद बक्सों के ड्राअरों में है। ड्राअर वास्तव में दो ही हैं। नीचे वाला चित्र ध्यान से देखें, हैंडल को बायीं ओर घुमा कर खींचने से केवल बाहर वाला खाली ड्राअर बाहर आयेगा। हैंडल दायीं ओर घुमाने पर अन्दर वाले ड्राअर के छेद में हुक अटक जायेगा और अन्दर वाला ड्राअर खिंच जायेगा जो पहले से ही भरा हुआ है।



ताश का जादू

जादूगर अटल [illegible] दिखाते हैं। सब कमल के इक्के हैं। फिर मंत्र पढ़ते हुए ताश पर हाथ फेरते हैं और चारों पत्ते पलक झपकते ही आर. एस. एस. के गुलाम बन जाते हैं। सब हैरान रह जाते हैं।

भेद—इस खेल में ताश के विशेष पत्तों का प्रयोग होता है। बायीं ओर वाली ताश देखें। इसमें आधा इक्का व आधा गुलाम बना है बस यही रहस्य है। जब जादूगर इक्के दिखा रहा होता है तो गुलाम वाले भाग दबे होते हैं। हाथ फेरते समय जादूगर पत्तों को उलट देता है इस बार गुलाम ऊपर आ जाते हैं और इक्कों वाले भाग नीचे दब जाते हैं।



जनता मैजिक

जादूगर चन्द्रशेखर एक केला लेकर दिखाते हैं। केला साबुत है। वे दर्शकों को भी देखने के लिए कहते हैं। इसके बाद वह केला छीलते हैं। दर्शक यह देख हैरान रह जाते हैं कि केला भीतर से कई टुकड़ों में कटा हुआ है।

भेद—एक केला लेकर उसमें एक जगह से सुई घुसेड़िये और सावधानी से उसे एक वृत में घुमाइये। केला कट जायेगा। छिलके पर केवल सुई बराबर छेद होगा जो साधारण तौर पर देखने पर नजर नहीं आता। इस प्रकार केले को जितनी मर्जी आवे उतने टुकड़ों में बगैर छिलका उतारे काटा जा सकता है।



राजनारायण का पीला जादू

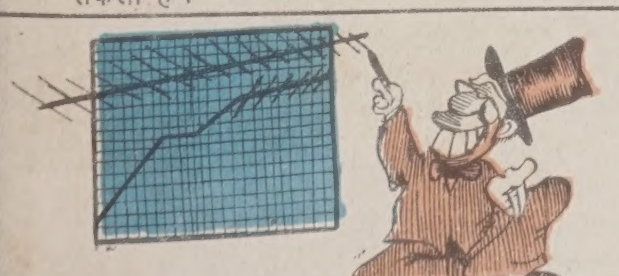
जादूगर ताश की गड्डी लेकर फैंटता है और दर्शक से एक पत्ता खिंचवाता है। पत्ता दोबारा गड्डी के बीच रख जादूगर पत्ते फैंटता है और ऊपर वाला पत्ता उठाने को कहता है। ऊपर वाला पत्ता वही जोकर है जो उसने खींचा था।

भेद—ताश गड्डी के सारे पत्ते एक ही होते हैं यानी सारे जोकर।

जादू की रेखा

वित्तमंत्रालय के जादूगर इस खेल को दिखाते हैं। जादूगर चार्ट लाकर मूल्य रेखा दिखाता है। क्योंकि मूल्य रेखा तो ऊपर ही जायेगी लेकिन जादूगर कहता है कि वह बगैर इस लकीर को छुये नीचे ला सकता है। वह ऊपर एक और रेखा समानान्तर खींचेगा फिर दोनों रेखाओं पर आड़ी तिरछी लाइनें लगाने पर ऐसा भ्रम पैदा करेगा जैसे सचमुच नीचे वाली रेखा नीचे झुक रही हो।

भेद—यह केवल नजरों का धोखा होता है।



पृष्ठ १८ से आगे



श्याम के मुंह से खुशी भरी चीख निकल गयी, 'देखो चार पेंस वाले टिकट के नीचे एक और टिकट है ! एक पेंस का हरा टिकट जिस पर किसी पत्ते का डिजायन है ।'

'अजीब बात है ।' मोहिन्दर की भवें झुक गयीं, 'राजू इसका क्या मतलब हुआ ?'

उत्तर श्याम ने दिया मैं बताता हूं इसका क्या मतलब है । इसमें कोई भेद नहीं है मेरे एक अंकल लन्दन में रहते हैं इसलिए मुझे पता है । जब यह पत्र डाला गया था तब ब्रिटेन में विदेशों को जाने वाली डाक पर बजट में डाक दर में वृद्धि की गयी थी । शायद भारत आने वाले लिफाफों के दर में तीन पेंस की वृद्धि हुयी हो ; जग्गी ने पत्र लिख लिफाफे पर पहले एक पेंस का टिकट लगाया होगा । फिर उसे डाक दरों की वृद्धि की याद आयी होगी । उसी टिकट पर चार पेंस का टिकट चिपका दिया ।'

'यह हो सकता है । मेरे ख्याल में श्याम का अन्दाजा बिलकुल सही है ।' मोहिन्दर ने कहा ।

'मुझे तो शक है ।' राजू ने लिफाफे पर लगे हरे टिकट को घूरा और फिर उसे सावधानी से उतारने लगा । 'इसके नीचे जरूर कुछ लिखा होना चाहिए ।' वह बोला !

'नहीं ।' टिकट उतर जाने पर श्याम बोला ।

तीनों ने देखा कि टिकटों के नीचे या टिकटों के पीछे कुछ भी कहीं नहीं लिखा था ।

'अब क्या कहते हो राजू ?' मोहिन्दर ने मुंह चिढ़ाया ।

राजू सिर खुजाने लगा, 'ऐसा नहीं होना चाहिए । इसका कुछ न कुछ मतलब जरूर होना चाहिए ।'

'क्या ?' श्याम ने जवाब मांगा !

'सोच रहा हूं ।' राजू ने कहा, 'जग्गी को पता था कि यह पत्र सेंसर होगा । इसलिए मेरा अनुमान है कि उसने टिकटों द्वारा अपना सन्देश अलीबाबा तक पहुंचाने का विचार किया होगा ! उसने एक टिकट के ऊपर दूसरा टिकट इस तरह चिपका दिया कि पता आसानी से न लगे । वह यही चाहता था कि अलीबाबा पूरे पत्र को लिफाफे सहित अच्छी तरह जांच-पड़ताल करे ।

'यह जो एक पेंस का हरा टिकट है यह लूट की रकम का प्रतीक है । टिकट पर हरे पत्ते का डिजायन है । हमारे देश में नोटों को बोल-चाल की भाषा में हरा पत्ता ही कहा जाता है । जग्गी का मतलब था…'

राजू कहता-कहता गहरे विचारों में खो गया । चुप्पी को मोहिन्दर ने तोड़ा जो खुशी के मारे उछल पड़ा था !

'मिल गया ! मिल गया !!' वह चीखा, 'चार पेंस के टिकट को गौर से देखो ! इसका विषय क्या है ? कैलेन्डर प्रिंटिंग इन ब्रिटेन । इंग्लैंड में कैलेन्डरों की छपाई करने की कला पर जारी किया गया विशेष डाक टिकट है ।

और जग्गी जब डाके के बाद अपनी बहन के घर झिलमिल बस्ती के कच्चे मकान में रहा था तो वह घर में ही पड़ा रहता था और उस दौरान उसने कमरे की सारी दीवारों पर कैलेन्डर चिपका-चिपका कर भर दिया था ! अब रहस्य साफ हो जाता है । एक पेंस के हरे पत्ते वाला टिकट डाके की रकम का संकेत है । वह कैलेन्डर विषयक टिकट के नीचे चिपकाया गया है । मतलब साफ है कि डाके की रकम दीवारों पर चिपके कैलेन्डर के पीछे है । हर कैलेंडरों के पीछे आठ या दस नोट आसानी से इस तरह फैला कर रखे जा सकते हैं कि किसी को पता न लगे ।'

'वह मारा !' श्याम ने खुश हो कर ताली बजाई । 'मोहिन्दर का अंदाजा बिलकुल सही होना चाहिए । क्यों राजू ?'

राजू ने सहमति में सिर हि बिलकुल ऐसा ही लगता है । मुझे या एक कहानी, एक मशहूर चोर की ! सुनार की दुकान से बहुत सारा चुराया और उसे पीट पीट कर वर्क बराबर पतला कर पुस्तकों की जिल्द भीतर छिपाया था । जग्गी के पास त थे जिन्हें इस प्रकार छिपाना और भी था ।'

श्याम बोला—'पत्र में उसने मैं महीने जिऊं या इतने दिन जिऊं मैं, मकान का नम्बर साफ साफ लिख देहली आओ तो बहन झिलमिल से द्वारा झिलमिल कॉलोनी का पता चाहता था । सेंसर के डर से वह साफ लिख भी तो नहीं सकता था ।'

मोहिन्दर ने कहा— 'आखिर पहेली हल कर ही ली । अब आगे कदम उठायें ?'

'करना क्या है ? प्रकाशनगर जग्गी के बहन के कमरे की दीवारों कैलेन्डर उखाड़ कर पैसे निकालने श्याम ने उत्तर दिया । राजू ने सिर 'हम किसी के घर जाकर वैसे ही मर्जी से उखाड़-पछाड़ थोड़े ही कर हैं ? यह काम पुलिस का है । हमार केवल गुत्थी सुलझाना था । लेकिन यह है कि इंस्पेक्टर चन्देल यहां हैं उनके अलावा पुलिस स्टेशन पर हमार आदमी नहीं सुनेगा । अब उनके प्रतीक्षा करनी पड़ेगी…।'

तभी नीचे से आवाज आई जासूसों के लिए टेलीफोन आया था फुर्ती से नीचे उतरे । शायद इन् चन्देल लौट आए हों आगरा से ।

राजू ने रिसीवर सम्भाला । तीन जासूस की ओर से मैं राजू बो हूं ।'

रिसीवर में आवाज आई 'फ् डिसूजा बोल रहा हूं ।'

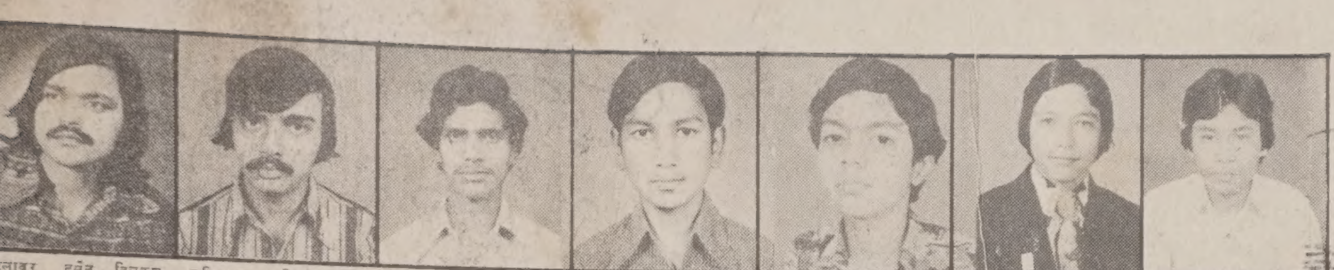
'फ्रेडरिक डिसूजा ?'

'क्या इंसपैक्टर चन्देल ने पहले तुम्हें मेरे बारे में नहीं बताया, मुझसे वादा किया था…।'

'नहीं जनाब ! उन्होंने आपके हमें कुछ नहीं बताया ।'

'कमाल है ! शायद मर्डर गर्मी में भूल गये होंगे ।' डिसूजा की आई । 'उन्होंने ही मुझे तुम्हारा टे नम्बर दिया था ।' मैं आल इण्डिय सेफ्टीगिल्ड का सुरक्षा अधिकारी हूं समाचार पत्रों में तुम्हारे द्वारा अली संदूक के खरीदे जाने का समाचा और…'

शेष आगामी अंक



लावर हुसैन दिलकश, ...शन रोड, पो० खगड़िया-...५१२०४, २४ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, रेडियो सिलोन र फरमाईश करना।

ललित गुप्ता, विमल स्टोर, ६८, काटन स्ट्रीट, कल०, १८ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, सैर करना, मोटर साईकिल ठीक करना व चलाना।

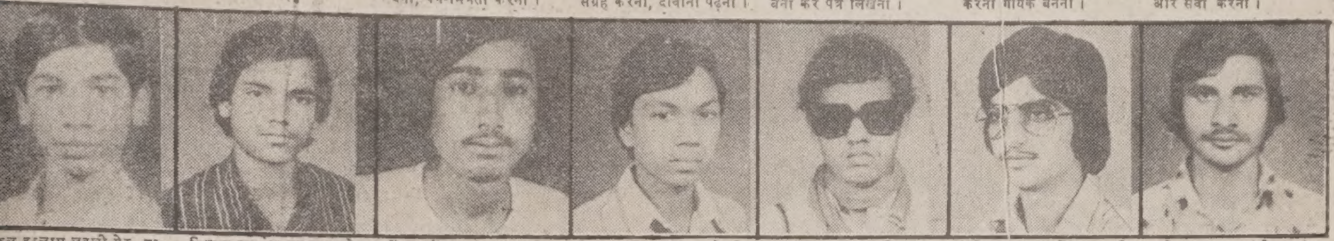
मनोज कुमार चौहान, क्वार्टर ३८, III, बी. एच. ई. एल. रानीपुर हरिद्वार, (यू० पी०) १६ वर्ष, माता-पिता को सुख देना, पत्र-मित्रता करना।

राजीवकुमार द्वारा रामकिशोर मौर्य, ६३ नई बस्ती, खुरजा, बुलन्दशहर (उ० प्र०) १७ वर्ष, पत्र-मित्रता, डाक टिकट संग्रह करना, दीवाना पढ़ना।

एम० ए० जमील रिजवी, रिजवी साईकल स्टोर्स, मेन रोड, कोन्डा गांव, (बस्तर), म. प्र., १४ वर्ष, नए पत्रमित्र बना कर पत्र लिखना।

कृष्ण बहादुर कार्की, कक्षा ८, नेपाल आदर्श माध्यमिक विद्यालय, गणबहारन काठमांडो, १६ वर्ष, पत्र मित्रता करना गायक बनना।

राजेन्द्र सायूमी 'थाक' ६/१३७ पुरानो भसार, काठमांडो, (नेपाल), १७ वर्ष, दीवाना पढ़ना, पत्र मित्रता करना और सेवा करना।



...हल इस्लाम लक्खी गेट, डा० ...ईम वाली गली, सहारनपुर, (उ. प्र.), १४ वर्ष, दीवाना पढ़ना, फिल्म देखना, पत्र मित्रता करना।

मिस्टर गुड्डू, आशानगर, सोह सराय (नालंदा), १७ वर्ष, पत्र मित्रता करना, क्रिकेट खेलना, स्टेज पर गाना गाना, पत्रिकायें पढ़ना।

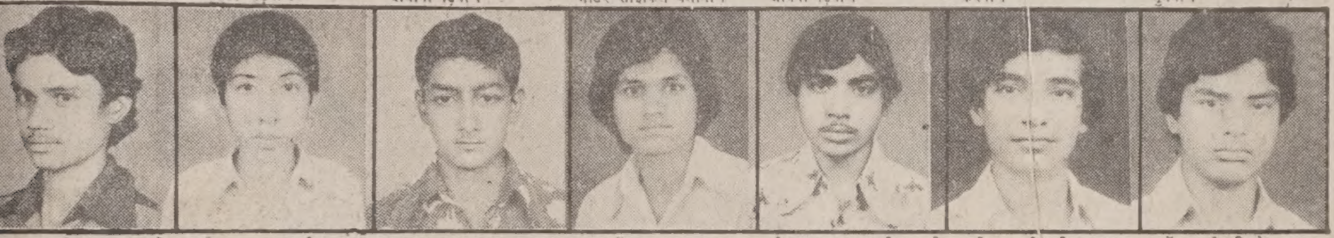
टिंकू मोंगा, ३, न्यू टाउन, मोगा, १७ वर्ष, कहानियां लिखना, गजलें सुनना तथा गाना, पत्र मित्रता करना, दीवाना पढ़ना।

विजय कुमार गुप्ता, कोठरी बांध झरिया, १७ वर्ष, 'अनमोल वचन' टिकट संग्रह करना, पत्र मित्रता करना, मोटर साईकिल चलाना।

मूलशंकर सुलतानपुरी, ग्राम धर्मदासपुर, पो० लोहरा मऊ, जिला सुलतानपुर (उ० प्र०), २० वर्ष, राजनेताओं की जीवनी पढ़ना।

अमित कुमार, सिगार साड़ी सेन्टर, ग्वालियर, १६ वर्ष, पत्र मित्रता करना, बड़े-बड़े शहर घूमना, बड़ों की सेवा करना।

सतीश कुमार गांधी, गांव सिसासा, जिला सोनीपत, हरियाणा, २१ वर्ष, मोटर चलाना, फिल्में देखना, रेडियो सुनना।



...हम्मद यासीन टाक, छत्रीसी ...टी बीकानेर, १८ वर्ष, उपन्यास तथा दीवाना पढ़ना, ...त्र व्यवहार करना, फिल्म देखना आदि।

अली मजहर बरनी, लद्धा वाला, म० नं० ८४८, मु० नगर, १४ वर्ष, दीवाना पढ़ना तथा क्रिकेट खेलना, लड़ाई करना, फिल्में देखना।

अहसान् हक द्वारा अब्दुला तवर, दीन मोहम्मद रोड, सीकर, १६ वर्ष, चटपटे चुटकले, गुप्त जासूसी किताबें पढ़ना और डांस करना।

ददन सिंह, पलटन बाजार, गोहाटी-८, १८ वर्ष, प्यार करना, पत्र-मित्रता करना, फिल्में देखना, उपन्यास पढ़ना, बड़ों का आदर करना।

सुरेश रामचन्द तारानी, भवानी वाच हाउस डी-४५, गांधीधाम कच्छ, १७ वर्ष, पुस्तक पढ़ना, फिल्म देखना, बड़ों का आदर करना, सैर करना।

सुशील चौकानी, भारत किराना स्टोर्स, गुढ़ियारी, रायपुर (म. प्र.) १७ वर्ष, गाने सुनना, फरमाईश भेजना, कैरम खेलना।

धर्मेन्द्र दुर्रा, किशोर सदन, मच्छी बाजार, नयानी बाड़ा, रायपुर (म. प्र.) १४ वर्ष, दीवाना पढ़ना लेखन, बड़ों का आदर करना।



...त राम थापा, थानकोट, ...पोस्ट, काठमाण्डो, नेपाल, ... वर्ष, पत्र-मित्रता करना, ...म देखना, डाक टिकट ...ह करना।

रविन्द्र कुमार सिंह, शिवाजी नगर, १००१४२ (म. प्र.) भोपाल ४६२००६, १८ वर्ष, क्रिकेट खेलना, पढ़ना-लिखना, बड़ों की आज्ञा मानना।

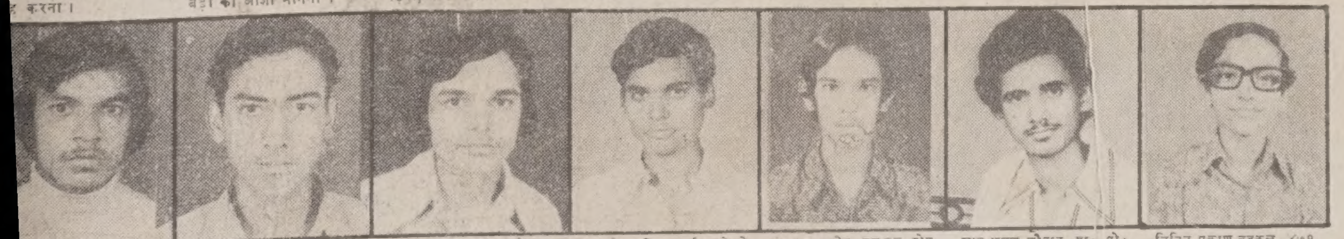
सजीव जैन, म० नं० बी-४, ६०१, वेट गंज, लुधियाना (पंजाब) १७ वर्ष, पत्र मित्रता करना, टिकट संग्रह, दीवाना पढ़ना, गाने गाना।

हर्ष कुमार मिश्री, म० नं० १५-३-३२५, बेगम बाजार हैदराबाद-१२. (आंध्र प्रदेश) १६ वर्ष, विदेशों में पत्र-मित्रता करना।

कृष्ण गोपाल पासी, सदर बाजार, पासी मुहल्ला, गली-४ जबलपुर (म. प्र.) २२ वर्ष, फोटो बनाना, गाने गाना, मोटर साईकिल चलाना।

अरुण श्रीवास्तव, मृगपाल कार्यालय, डमरू सिनेमा के सामने, झांसी, १६ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, संगीत व दीवाना पढ़ना।

सूरज जायसवाल, १४५, शिव शंकर पुरी, मेरठ शहर-१, २० वर्ष, दीवाना पढ़ना, मित्रता करना, एक्टिंग करना, मोटर साईकिल चलाना।



... गर्ग, मोहर सिंह रतन ... सोनीपत मण्डी, ...णा) १८ वर्ष, पत्र-... करना, फिल्म देखना, ... साईकिल चलाना।

प्रदीप कुमार पारीक, गणेशपुरा नवलगढ़, (राजस्थान) १५ वर्ष, माता-पिता की सेवा करना, क्रिकेट खेलना, पत्र-मित्रता करना।

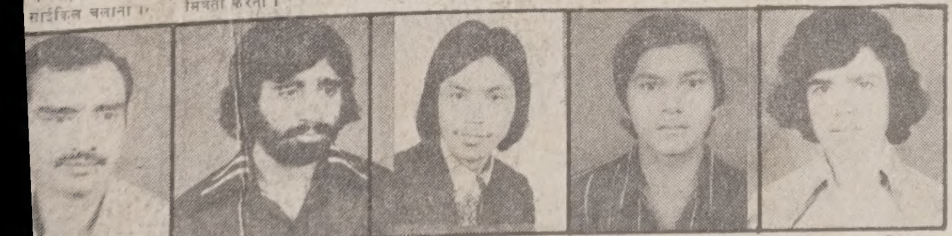
सुनील कुमार बजाज, गोरक्षण रोड, वर्धा, १६ वर्ष, दीवाना पढ़ना, पढ़ाई करना, पत्र-मित्रता करना, गरीबों की सहायता करना।

रामजी विश्वकर्मा, रेलवे कालोनी, इटारसी, १६ वर्ष, वर्ष, दीवाना पढ़ना, टेप रिकार्डर में अनेक प्रकार की बोली टेप करना।

हंसराज मुणोत, एन.एस. रोड, छबड़ा, १८ वर्ष, टिकट संग्रह करना, नावल पढ़ना, दोस्ती करना, बच्चों से प्यार करना, गाने गाना व सुनना।

चन्द्र भूषण चौहान, ग्रा० पो० बौरही, पटना, १८ वर्ष, दीवाना पढ़ना, पत्र-मित्रता करना, दुनिया की तारीफ करना, गाने गाना।

नितिन प्रकाश बडकुल, ४७१, जवाहर गंज, जबलपुर, १४ वर्ष, दीवाना पढ़ना, स्वीमिंग खेलना, पत्र-मित्रता करना, मोटर साईकिल चलाना।



... श्याम, फरसकल, ...नगर, (राज०) १५ ... पढ़ना, गप्पे ... घुड़सवारी करना, ...ईकिल चलाना।

गोपाल दास आहूजा, म० नं० १६, शेख बाड़ा, फरीदाबाद (शहर) २१ वर्ष, नावल पढ़ना, डांस करना, दीवाना पढ़ना, दोस्ती करना।

शाक्य पूर्ण निराला, १०५ पाको न्यूरोड, काठमाण्डो ६, नेपाल, २४ वर्ष, पत्र-मित्रता, टिकट संग्रह करना, मित्रता निभाना फिल्म देखना।

मुकेश कुमार, बेरमो गिरीडीह, (बिहार) १७ वर्ष, क्रिकेट खेलना, रेडियो सुनना, कुश्ती लड़ना, बड़ों का आदर करना, सिनेमा देखना।

सुनील कुमार सरावगी, जुहार मल, पाली राम, पो० साहुल पुर, (चूरू) राजस्थान, १७ वर्ष, टिकट संग्रह करना, पत्र-मित्रता करना।

दीवाना फ्रैंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ____________

पता ____________

आयु ____ शौक ____________

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

... प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक-विश्वबन्धु गुप्ता।

Regd. No. D (D) - 275

